بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक

बदर

क़ादियान

Weekly Badar Qadian

HINDI

अल्लाह तआला का आदेश

وَمَنۡ یُّعَظِّمۡ شَعَآئِرَ اللّٰہِ فَاِنَّہَا مِنۡ تَقۡوَی الۡقُلُوۡبِ ﴿۳۳﴾ لَکُمۡ فِیۡہَا مَنَافِعُ اِلٰۤی اَجَلٍ مُّسَمًّی ثُمَّ مَحِلُّہَاۤ اِلَی الۡبَیۡتِ الۡعَتِیۡقِ ﴿۳۴﴾ (الحج:34-33)

अनुवाद : यह (एक महत्वपूर्ण बात है) और जो कोई अल्लाह की निशानियों का सम्मान करेगा, तो निश्चय ही यह दिलों के तक़वा की निशानी है।

तुम्हारे लिए इन (क़ुरबानी के जानवरों) में एक तय समय तक लाभ हैं, फिर उन्हें पुराने घर तक पहुँचाना है।

संपादक : शेख मुजाहिद अहमद | उप संपादक : सय्यद मोहियुद्दीन फ़रीद | वर्ष- 11 | अंक-43-44 | 17-10 जमादिउल अव्वल 1448 हिज्री कमरी, 29-22 ईखा 1405 हिज्री शम्सी, 22-29 अक्टूबर 2026 ई.

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी



मक्का शहर को अल्लाह तआला ने उसी दिन सम्मान वाला बनाया था, जिस दिन उसने आकाश और धरती को पैदा किया।

عَنۡ عَابِسِ بۡنِ رَبِیۡعَۃَ، عَنۡ عُمَرَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ "اَنَّہُ جَاءَ اِلَی الۡحَجَرِ الۡاَسۡوَدِ فَقَبَّلَہُ فَقَالَ: اِنِّیۡ اَعۡلَمُ اَنَّکَ حَجَرٌ لَا تَضُرُّ وَلَا تَنۡفَعُ، وَلَوۡلَا اَنِّیۡ رَاَیۡتُ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ یُقَبِّلُکَ مَا قَبَّلۡتُکَ".

[صحیح البخاری/کتاب الحج/حدیث:1597]

हज़रत आबिस बिन रबीआ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु हजरे असवद के पास आए और उसे बोसा दिया और कहा: "मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तू केवल एक पत्थर है। न तू कोई लाभ पहुँचा सकता है और न नुकसान। अगर मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तुझे बोसा देते हुए न देखा होता, तो मैं कभी तुझे बोसा न देता।"

मक्का शहर को अल्लाह तआला ने उसी दिन सम्मान वाला बनाया था, जिस दिन उसने आकाश और धरती को पैदा किया।

हज़रत आबिस बिन रबीआ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु हजरे असवद के पास आए और उसे बोसा दिया और कहा: "मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तू केवल एक पत्थर है। न तू कोई लाभ पहुँचा सकता है और न नुकसान। अगर मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तुझे बोसा देते हुए न देखा होता, तो मैं कभी तुझे बोसा न देता।"



हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम इमाम मेहदी - मसीह मौऊद का उपदेश

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआ के शब्द

1886 में जब हज़रत सूफ़ी अहमद जान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु हज के लिए जाने लगे तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें एक पत्र में लिखा:

"इस बेबस और नाकारा व्यक्ति की एक विनम्र प्रार्थना याद रखें कि जब आपको अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बैतुल्लाह की ज़ियारत का अवसर मिले तो उस मुबारक जगह पर इस सबसे छोटे अल्लाह के बंदे की ओर से इन्हीं शब्दों में अपनी बेबसी और गरीबी के साथ दिल से दुआ करें:

ऐ सबसे बढ़कर रहम करने वाले! तेरा एक बेबस और नाकारा, गुनाहगार और अयोग्य बंदा गुलाम अहमद, जो तेरी धरती मुल्क-ए-हिंद में है, उसकी यह प्रार्थना है कि ऐ सबसे बढ़कर रहम करने वाले! तू मुझसे राज़ी हो जा और मेरे गुनाहों और गलतियों को माफ़ कर, क्योंकि तू बहुत माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है। और मुझसे ऐसा काम करा जिससे तू बहुत अधिक राज़ी हो जाए।

मेरे और मेरे नफ़्स के बीच पूरब और पश्चिम जितनी दूरी कर दे। मेरी ज़िंदगी, मेरी मौत, मेरी हर ताक़त और जो कुछ भी मुझे मिला है, उसे अपनी ही राह में लगा दे। अपनी ही मुहब्बत में मुझे ज़िंदा रख और अपनी ही मुहब्बत में मुझे मौत दे और अपने ही मुकम्मल इनाम के साथ मुझे उठाना।

ऐ सबसे बढ़कर रहम करने वाले! जिस काम को फैलाने के लिए तूने मुझे नियुक्त किया है और जिस सेवा के लिए तूने मेरे दिल में जोश पैदा किया है, उसे अपने ही फ़ज़ल से पूरा कर। और इस बेबस व्यक्ति के हाथ से इस्लाम की सच्चाई का सबूत विरोधियों पर और उन सभी लोगों पर पूरा कर, जो अब तक इस्लाम की खूबियों से अनजान हैं।

और इस बेबस व्यक्ति तथा उसके सभी दोस्तों, सच्चे चाहने वालों और हम-मशरब लोगों को अपनी माफ़ी और मेहरबानी की नज़र से अपनी हिफ़ाज़त के साये में रख। दीन और दुनिया में तू खुद उनका ज़िम्मेदार और रखवाला बन जा। और सबको अपने दारुर्रज़ा में पहुँचा। और अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, उनकी आल और सहाबा पर अधिक से अधिक दरूद, सलाम और बरकतें नाज़िल कर। आमीन, या रब्बुल आलमीन।" (मकतूबात-ए-अहमद, जिल्द 3, पृष्ठ 27)

नमाज़ में लगने वाला समय अश्लीलता और बुरे कामों से बचाता है

हमने कुर्बानियों को अल्लाह की निशानियों में शामिल किया है

"फिर फ़रमाता है, وَالۡبُدۡنَ جَعَلۡنٰہَا لَکُمۡ مِّنۡ شَعَآئِرِ اللّٰہِ। और तू उनको बता दे कि कुर्बानियों को हमने अल्लाह की निशानियों में शामिल किया है। यानी वे इंसान को खुदा तक पहुँचाती हैं और उनके ज़रिए दीन और दुनिया की भलाई मिलती है। इसलिए कुर्बानी के दिनों में कुर्बानी के जानवरों को कतारों में खड़ा करके उन पर अल्लाह तआला का नाम लिया करो, ताकि वे अल्लाह तआला के बंदों के काम आएँ। फिर जब वे ज़बह होकर अपने पहलुओं पर गिर जाएँ, तो खुद भी उनका गोश्त खाओ और सब्र करने वाले गरीबों और मजबूर गरीबों को भी खिलाओ। यह सारा माल हमने तुम्हें दिया है, ताकि इसे गरीबों पर खर्च करके अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो।

इन आयतों में अल्लाह तआला ने उन कुर्बानियों की अहमियत की ओर ध्यान दिलाया है, जो बैतुल्लाह के हज के मौके पर की जाती हैं। और बताया है कि ये कुर्बानियाँ अल्लाह की निशानियों में शामिल हैं और तुम्हारे लिए इन कुर्बानियों में अल्लाह तआला की ओर से बड़ी बरकत रखी गई है।"

(तफ़सीर-ए-कबीर, जिल्द 6, पृष्ठ 53-54)

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसिहिल अज़ीज़ सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का जलसा सालाना जर्मनी 2026 के अवसर पर महिलाओं से ज्ञानवर्धक संबोधन का सारांश

तशह्हुद, तअव्वुज़ और सूरह फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आप आज जलसा सालाना में शामिल होने के लिए इकट्ठी हुई हैं। अल्लाह तआला का जमाअत पर बहुत बड़ा एहसान है कि उसने जमाअत की महिलाओं में यह एहसास पैदा किया है, जो उन्हें इस ओर ध्यान दिलाता रहता है कि हमने दीन का ज्ञान प्राप्त करने की ओर ध्यान देना है, ताकि हम भी और हमारी नस्लें भी अल्लाह के फ़ज़्लों को प्राप्त करने वाली बनें। इस समय जब दुनिया खेल-कूद और बेकार कामों में हद से ज़्यादा डूब रही है और ख़ुदा को भुला रही है, हमें दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने के अपने वचन पर चलते रहना चाहिए। इस ज़माने में इस सच्चाई से इनकार नहीं किया जा सकता कि हर तरफ़ से दज्जाल के हमलों ने अहमदियों को भी कुछ न कुछ प्रभावित किया है और कुछ अहमदी महिलाएँ भी इससे बची हुई नहीं हैं। ख़ास तौर पर इन देशों में शिक्षा और तरक़्क़ी के नाम पर शैतान प्रभावित करता है।

इस्लाम उच्च शिक्षा प्राप्त करने से नहीं रोकता, बल्कि इसकी प्रेरणा देता है। इस्लाम तरक़्क़ी करने और दुनिया की नेमतों से फ़ायदा उठाने से नहीं रोकता, बल्कि इस ओर ध्यान दिलाता है, लेकिन साथ ही कहता है कि अपने कर्तव्य भी पूरे करो।

हुज़ूर अय्यदहुल्लाह ने फ़रमाया कि इतिहास में हम देखते हैं कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा और दूसरी महिलाओं का ज़िक्र मिलता है, जो अपनी दीन और रूहानी हालत तथा बुज़ुर्गी में बहुत आगे बढ़ी हुई थीं। इसके साथ ही वे ज्ञान भी रखती थीं। बल्कि उनकी रिवायतें अक्सर फ़ुक़हा को मसले हल करने में मदद देती हैं। लेकिन उन्हें यह भी मालूम था कि महिला की क्या ज़िम्मेदारी है और घर तथा समाज में अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभाने में उसे क्या भूमिका अदा करनी है। वे अपना अधिकार लेने के बजाय दूसरों को उनका अधिकार देने और अपने कर्तव्य पूरे करने की बात करती थीं। यही कारण है कि इस्लाम के इतिहास में उनके नाम सुनहरे अक्षरों में लिखे गए हैं।

आज अहमदी महिलाओं को यह सामने रखना है कि उन्होंने इन ज़िम्मेदारियों को किस तरह निभाना है। घर, समाज, बच्चों और परिवार की बेहतरी के लिए अपना उदाहरण पेश करना है। इस बात पर भी विचार करना है कि यदि उनके विचार में या वास्तव में पुरुष अपनी ज़िम्मेदारियाँ पूरी नहीं कर रहे, तो उन्होंने आने वाली नस्लों में अच्छे चरित्र वाले और दीनदार पुरुष तथा महिलाएँ पैदा करनी हैं, ताकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जो बैअत का वचन किया है, उस पर अमल करके हम एक सुंदर समाज स्थापित कर सकें। इसलिए यह देखना होगा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमसे क्या चाहते हैं।

हुज़ूर अय्यदहुल्लाह ने फ़रमाया कि इस समाज में रहते हुए तरक़्क़ी के नाम पर बहुत कुछ कहा जा रहा है, लेकिन एक अहमदी मुसलमान बनने के लिए हमें अपनी भूमिका अदा करनी है। हमें यह देखना है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमसे क्या चाहते हैं। आपने अलग-अलग अवसरों पर जो नसीहतें फ़रमाई हैं, उन्हें हमेशा याद रखना चाहिए। ऐसा तभी हो सकता है जब हम उन नसीहतों को सामने रखकर बार-बार दोहराते रहें। अन्यथा अहमदी होने का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ध्यान दिलाया कि इस बात को याद रखो कि जो लोग मुझसे संबंध रखते हैं, लेकिन उनके काम सही नहीं हैं, तो अल्लाह तआला उन्हें कभी पसंद नहीं करता। अपनी हालत बदलने के लिए याद रखो कि जहाँ अल्लाह को याद रखना और उसकी इबादत का हक़ अदा करना है, वहीं यह भी याद रखो कि दूसरों के अधिकार पूरे करने के लिए हर नेकी करने वाले के साथ नेकी करनी चाहिए। अच्छे अख़लाक़ का अर्थ केवल यह नहीं है कि नेकी करने वाले के साथ नेकी करो, बल्कि बुराई करने वाले के साथ भी नेकी करो। आपने फ़रमाया कि जब तक यह स्तर पैदा नहीं होगा, तब तक वह सच्ची रूह पैदा नहीं हो सकती, जिसके लिए इस जमाअत की स्थापना हुई है।

इसलिए हमेशा याद रखें कि जहाँ अल्लाह की इबादत करनी है, वहीं उसके बंदों के अधिकार भी पूरे करने हैं। समाज में शांति स्थापित करने और लड़ाई-झगड़ों तथा फ़साद को ख़त्म करने के लिए पूरी कोशिश करनी है। छोटी-छोटी बातों पर सास-बहू और पति-पत्नी के बीच झगड़े हो जाते हैं। जब तक हममें एक-दूसरे को माफ़ करने का एहसास पैदा नहीं होगा, तब तक पाक समाज स्थापित नहीं हो सकता।

हर अहमदी पुरुष और महिला को याद रखना चाहिए कि सुलह की नींव रखनी है। इसकी शुरुआत अपने घर से होती है। इसी से आने वाली नस्ल को भी सीख मिलेगी और वे अपने माहौल में भी प्यार और शांति स्थापित करने वाले बनेंगे।

हुज़ूर अय्यदहुल्लाह ने फ़रमाया कि फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जमाअत को आपस में मेल-मिलाप और प्यार से रहना चाहिए। आपने फ़रमाया कि मैं केवल दो बातें लेकर आया हूँ। एक यह कि अल्लाह को मानो और दूसरी यह कि आपस में प्यार और हमदर्दी दिखाओ। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम में भी इसी तरह बदलाव पैदा हुआ था। जब तक तुममें से हर व्यक्ति ऐसा नहीं हो जाता कि जो अपने लिए पसंद करता है, वही अपने भाई के लिए भी पसंद करे, तब तक वह मेरी जमाअत में से नहीं है। यह बहुत डराने और सावधान करने वाला वाक्य है। हर पुरुष और महिला को विचार करना चाहिए कि आपके उद्देश्य को पूरा करने और बैअत का हक़ अदा करने के लिए आपस में प्यार पैदा करना ज़रूरी है। आपने फ़रमाया कि महदी की एक निशानी यह भी है कि दिलों से दुश्मनी और द्वेष निकल जाएगा। अब जब मसीह और महदी को मान लिया है, तो यह सोचना होगा कि हम एक-दूसरे के लिए अपने दिलों से दुश्मनी और द्वेष निकालेंगी, तभी बैअत का हक़ अदा करने वाली बनेंगी।

हुज़ूर अय्यदहुल्लाह ने फ़रमाया कि फिर आपने फ़रमाया कि दुनिया को अपना असली उद्देश्य न बनाओ, बल्कि दीन को अपना उद्देश्य बनाओ। आप इन देशों में आई हैं और अल्लाह ने आपको आर्थिक सुविधा भी दी है। यहाँ के हालात पाकिस्तान या उन जगहों से बहुत बेहतर हैं, जहाँ से आप हिजरत करके आई हैं। लेकिन यदि दीन आपका असली उद्देश्य नहीं, बल्कि दुनिया है, तो फिर यहाँ आने का कोई फ़ायदा नहीं। क्योंकि आपमें से अधिकतर यहाँ इसीलिए आई हैं कि दूसरे देशों में, ख़ास तौर पर पाकिस्तान में, आपको दीन पर सही तरह अमल करने की अनुमति नहीं थी। इसलिए हर मामले में दीन को प्राथमिकता दें। ऐसा न हो कि धन-दौलत आ जाए तो दीन को भूल जाएँ। दीन को सामने रखना ही एक अहमदी की निशानी है।

फिर आपने फ़रमाया कि माल-दौलत और औलाद की मुहब्बत में इतने न डूब जाओ कि तुम्हारे और ख़ुदा तआला के बीच पर्दा पैदा हो जाए। औलाद भी परीक्षा का कारण बनती है। कुछ महिलाएँ भी औलाद की ख़ातिर झगड़ों में शामिल हो जाती हैं। सास-बहू के झगड़ों में महिलाओं की भी एक भूमिका होती है। आपने फ़रमाया कि अहमदी मुसलमान बनने के बाद तुम्हें इन झगड़ों को ख़त्म करना है। जब तुम ऐसा करोगी, तो उस ज़िम्मेदारी को पूरा करने वाली बनोगी, जिसके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की है।

आपने फ़रमाया कि यह न समझो कि यही दुनिया सब कुछ है। मरने के बाद अल्लाह तआला सवाल-जवाब करेगा और ग़लत कामों की सज़ा भी देगा। इस दुनिया और अगली दुनिया में भलाई हासिल करने के लिए साधन पैदा करो। फिर फ़रमाया कि दीन का ज्ञान प्राप्त करने और अल्लाह की हिदायत पर अमल करने के लिए क़ुरआन का ज्ञान हासिल करो। इससे न केवल अपनी हालत बेहतर होगी, बल्कि तबलीग़ के क्षेत्र में भी सुधार होगा।

हुज़ूर अय्यदहुल्लाह ने फ़रमाया कि इसलिए इन बातों को हमेशा याद रखना चाहिए। महिलाओं को भी तबलीग़ के क्षेत्र में आगे आना चाहिए।

दुनिया के इन हालात में अल्लाह तआला से अपना संबंध मज़बूत करें और उसका संदेश पहुँचाने की कोशिश करें, ताकि दुनिया को पता चले कि उसकी सुरक्षा और भलाई अल्लाह तआला की ओर झुकने में है, न कि दुनिया की शान-शौकत में।

आपने फ़रमाया कि यह मत समझो कि बैअत करने से ख़ुदा राज़ी हो जाता है। यह तो केवल बाहरी छिलका है, इसका असली सार इसके अंदर है। और वह सार यही है कि इस्लाम की वास्तविक शिक्षा पर अमल करो। यह अमल उस समय तक नहीं हो सकता, जब तक तुम क़ुरआन करीम का अध्ययन नहीं करोगी और उसे पढ़कर समझने की कोशिश नहीं करोगी। यह केवल पुरुषों का काम नहीं है कि वे पढ़कर अमल करें। पुरुषों का काम है कि वे महिलाओं को पढ़ाएँ। जबकि जमाअती व्यवस्था में लजना का एक अलग प्रबंध भी स्थापित है और महिलाओं की अपनी संगठनात्मक व्यवस्था है। क़ुरआन पढ़ने और शिक्षा देने का प्रबंध भी मौजूद है। महिलाओं को चाहिए कि इस ओर पूरा ध्यान दें और कोशिश करें। अब तो बहुत-सी पढ़ी-लिखी महिलाएँ और लड़कियाँ हैं। वे जहाँ क़ुरआन करीम पढ़ना सीखें, वहीं उसका अनुवाद भी सीखें। फिर देखें कि अल्लाह तआला के क्या आदेश हैं। क़ुरआन करीम को सही ढंग से पढ़ने की कक्षाएँ लगती हैं। केवल पढ़ना सिखाना उद्देश्य नहीं होना चाहिए, बल्कि यह नीयत होनी चाहिए कि उस पर अमल करना है। किन बातों को करने और किनसे रुकने का आदेश दिया गया है। जब वे ऐसा करेंगी, तभी सच्ची अहमदी कहलाएँगी।

हुज़ूर अय्यदहुल्लाह ने फ़रमाया कि क़ुरआन करीम ने पर्दे, शर्म-हया वाला लिबास पहनने, हिजाब करने और पुरुषों से एक दूरी बनाए रखने का आदेश दिया है। इस समाज में इन बातों को नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है और इन पर ध्यान नहीं दिया जाता। आपका कर्तव्य है कि क़ुरआन करीम के इन आदेशों पर अमल करें। तभी आप एक सुंदर समाज स्थापित कर सकेंगी। तभी पुरुषों की इस्लाह करने वाली भी बन सकेंगी और इस्लाम का संदेश पहुँचाने वाली भी।

हुज़ूर अय्यदहुल्लाह ने फ़रमाया कि याद रखें कि हर अहमदी मुसलमान, चाहे पुरुष हो या महिला, उसे अपनी ज़िंदगी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नमूना दिखाना चाहिए। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या नमूना था? आपने फ़रमाया कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना नमूना दिखाते हुए फ़रमाया कि मेरा जीना और मरना ख़ुदा के लिए है। अब हमारी क्या हालत है? हम कलमा पढ़ लेते हैं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं। लेकिन सच्चे मुसलमान का उद्देश्य तो ख़ुदा तआला का क़ुर्ब हासिल करना है। यह समझना है कि उसका सच्चा बंदा किस तरह बनना है। लेकिन आजकल के मुसलमान क्या हैं? यदि हम अपना जायज़ा लें, तो हमें भी पता चल जाएगा कि हम क्या हैं। हम दुनिया के लिए जीते हैं और दुनिया के लिए मरते हैं। यूरोप में आकर हमारी प्राथमिकताएँ बदल गई हैं। हम दुनिया की तलाश में लगे रहते हैं। हम सवाल करते हैं कि अल्लाह तआला हमारी दुआएँ क्यों नहीं सुनता? इसकी क्या वजह है? अल्लाह तआला तो कहता है कि पहले मेरी बातों पर अमल करो, फिर मैं तुम्हारी दुआएँ भी सुनूँगा।

आपने फ़रमाया कि मुसलमान बनना आसान बात नहीं है। जब तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आज्ञा का पालन और आपका नमूना अपने अंदर पैदा न करो, तब तक संतुष्ट न हो। केवल बाहरी छिलके तक सीमित न रहो, बल्कि उसके सार और रूह को तलाश करो। रूह उस समय तक नहीं मिल सकती, जब तक इस्लामी शिक्षाओं पर अमल करने की कोशिश नहीं करोगे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी पर विचार नहीं करोगे।

हुज़ूर अय्यदहुल्लाह ने फ़रमाया कि आजकल मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श जीवन पर ख़ुत्बे दे रहा हूँ। उन्हें भी ध्यान से सुनना चाहिए, उन पर अमल करना चाहिए और उन्हें अपनी ज़िंदगी में अपनाने की कोशिश करनी चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस्लाम की हालत की बहुत चिंता रहती थी। एक अवसर पर आपने गहरी आह भरकर फ़रमाया था कि मैं किस तरह बताऊँ कि इस्लाम की क्या हालत हो रही है। यह ऐसा ज़माना है जिसमें तुम लोगों को क़ुर्बानियाँ करने, दीन सीखने और दीन फैलाने की ज़रूरत है। इसलिए जब तक हम अपनी हालत नहीं बदलेंगे और हमारी महिलाएँ, हमारे बच्चे, पुरुष तथा युवा इस बात पर अमल करने की कोशिश नहीं करेंगे कि हमने अपनी ज़िंदगी को ख़ुदा तआला के आदेशों और शिक्षा के अनुसार चलाना है, तब तक हम दावा नहीं कर सकते कि हम सच्चे मुसलमान हैं। इस बात पर बहुत अधिक कोशिश करने और ध्यान देने की ज़रूरत है। समाज में जो बुराइयाँ हैं, उनसे बचने की भी ज़रूरत है। आपने फ़रमाया कि आजकल के ज़माने की उन कठिनाइयों से बचते रहो और दुआओं में लगे रहो तथा इस्लाम की सच्चाई अपने अंदर पैदा करो।

ये कठिनाइयाँ क्या हैं? टीवी, इंटरनेट और सोशल मीडिया। इनमें गंदगी, बुराई और ग़लत दिशा दिखाने वाली बातों के अलावा कुछ नहीं मिलता। इन्हीं चीज़ों ने लोगों के अख़लाक़ भी बिगाड़ दिए हैं और नैतिक मूल्यों को बहुत नीचे गिरा दिया है। ऐसी हालत में अहमदी पुरुषों, महिलाओं और युवाओं का काम है कि वे इनसे बचें और इनके प्रभाव का मुकाबला करने, इनका खंडन करने तथा इन्हें दूर करने की कोशिश भी करें। अपना उदाहरण भी पेश करें। नई तकनीक में सोशल मीडिया के माध्यम से बुराई के मुकाबले में नेकी और अच्छाई का संदेश दें। यह काम केवल अपनी इच्छा से नहीं हो सकता, बल्कि इसके लिए भी दुआओं की ज़रूरत है। आपने फ़रमाया कि दुआओं में लगे रहो और इस्लाम का सच्चा नमूना दिखाओ, जिसके परिणामस्वरूप पहले एक क्रांति आई थी। इसलिए यदि क्रांति पैदा करनी है, तो क़ुर्बानियों और दुआओं की ज़रूरत है।

जब तक ऐसा नहीं होगा, तब तक हम नहीं कह सकते कि हम अहमदी मुसलमान हैं।

हमेशा याद रखें कि अपने घरों में नमाज़ों को नियमित करें। कुछ महिलाएँ कहती हैं कि जब वे पुरुषों से कहती हैं, तो वे ग़ुस्सा दिखाते हैं। इसलिए समझदारी से उन्हें कहती रहें। बच्चों को भी कहती रहें। बच्चों के बारे में पुरुषों को समझाती रहें कि यदि तुमने अमल नहीं किया, तो बच्चे भी अमल नहीं करेंगे और ख़ुदा तआला से दूर हो जाएँगे। फिर शिकायत करेंगे कि अल्लाह का फ़ज़्ल नहीं होता और वह दुआ नहीं सुनता। इसलिए यदि अल्लाह के फ़ज़्ल प्राप्त करने हैं, तो अपनी हालत बदलनी होगी। ऐसा करने पर ही वे इंसान और अहमदी बन सकते हैं, जिनके लिए अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा है।

हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया कि आजकल मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श जीवन और इस ज़माने में आपके सच्चे ग़ुलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आदर्श जीवन की विभिन्न विशेषताओं का ज़िक्र कर रहा हूँ। आपने किस तरह के नमूने पेश किए और इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किस तरह वे नमूने हमारे सामने रखे। उन पर विचार करें, उन्हें देखें और सुनें तथा उन पर अमल करने की कोशिश करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम स्पष्ट रूप से फ़रमाते हैं कि इस बात पर ख़ुश न हो जाओ कि हम नमाज़ पढ़ते हैं और रोज़ा रखते हैं या छोटे-मोटे अपराधों से बचे हुए हैं। इन अच्छाइयों में दूसरे धर्मों के लोग और मुशरिक भी तुम्हारे साथ शामिल हैं। आजकल मीडिया में ऐसे-ऐसे कार्यक्रम आते हैं, जिन्हें देखने से इंसान यदि व्यवहार में बुराई में नहीं पड़ता, तो मानसिक और नैतिक बुराइयों में ज़रूर पड़ जाता है। इन चीज़ों को कुछ अहमदी मुसलमान भी पसंद करते हैं, बल्कि अच्छे अख़लाक़ वाले और शरीफ़ लोग भी इन्हें पसंद करने लगते हैं। इसके परिणामस्वरूप वे अपना नुकसान करते हैं, अपने अख़लाक़ बिगाड़ते हैं और समाज पर बुरा प्रभाव डालते हैं। लेकिन हमें अल्लाह तआला का हक़ और उसकी मख़लूक़ का हक़ अदा करने की कोशिश करनी है। यदि ये बातें हमारे अंदर नहीं हैं और हमें दुनिया वालों के पीछे चलना है, अपने अधिकार लेने की कोशिश करनी है, लेकिन अपने कर्तव्य पूरे करने पर ध्यान नहीं देना और दुनिया को अपना उद्देश्य बनाना है, तो अल्लाह तआला की नज़र में हमारे अहमदी मुसलमान होने की कोई अहमियत नहीं है।

अल्लाह करे कि सभी महिलाएँ और पुरुष भी अपनी ज़िम्मेदारियों को समझें और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को पूरा करने में मददगार बनें तथा जलसे में आने के उद्देश्य को पूरा करने वाले हों। तभी हम कह सकते हैं कि हम अहमदी मुसलमान हैं और इसके बिना हमारा कोई जीवन नहीं है। अल्लाह तआला हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

हुज़ूर अनवर का संबोधन दोपहर 12 बजकर 28 मिनट तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई। दुआ के बाद समूहों के रूप में नासिरात और लजना इमाउल्लाह की सदस्यों ने तराने पेश किए। इसके बाद हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि लजना इमाउल्लाह जर्मनी में उपस्थित सदस्यों की संख्या 19,494 है। साथ ही आपने नसीहत फ़रमाई कि आप लोग जो तराने पढ़ती हैं, उनका उद्देश्य केवल गाना नहीं है, बल्कि उन पर अमल करने की कोशिश भी करनी चाहिए।

सलाम करने के बाद दोपहर 12 बजकर 43 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ऐवान-ए-मसरूर से तशरीफ़ ले गए।

प्रिय पाठकगण अवश्य ध्यान दें

अखबार बदर की सहायता

अखबार बदर को यह सम्मान प्राप्त है कि यह अखबार पूर्ण रूप से इस युग के मामूर, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सच्चे सेवक, हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बरकत वाली सहायता में पनपा। शुरुआत से आज तक, पहले नबुव्वत और बाद में खिलाफत अला मिन्हाजे नबुव्वत के संरक्षण में यह अखबार प्रचार और प्रशिक्षण के कर्तव्यों को पूरा करता चला आ रहा है। कई नेक लोगों ने इस अखबार के माध्यम से अहमदियत को स्वीकार किया। इस अखबार के माध्यम से खिलाफत-ए-अहमदिया के निर्देशों की रोशनी में अहमदी घरों का प्रशिक्षण हो रहा है और आगे भी इंशाअल्लाह होता चला जाएगा।

अखबार की तैयारी, प्रकाशन, पैकिंग और भेजने में बहुत अधिक खर्च होते हैं। केवल मामूली सदस्यता शुल्क से इन खर्चों को पूरा करना संभव नहीं है। इसके लिए खास सहायकों की बहुत आवश्यकता है, जो इस युग के मामूर के इस अखबार के खर्चों को उठाने वाले हों।

इस अखबार की सहायता करने वालों को अल्लाह कभी व्यर्थ नहीं जाने देगा, क्योंकि अल्लाह का वादा है कि:

إِنِّي مُعِينٌ مَنْ أَرَادَ إِعَانَتَكَ

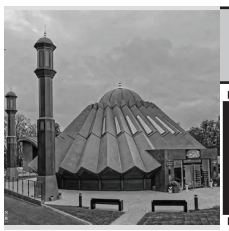
(अर्थात् मैं उसकी सहायता करूँगा जो तुम्हारी सहायता करेंगे।)

सहायता करने वालों के सभी मामलों का अल्लाह स्वयं संरक्षक हो जाएगा और अपने वादे के अनुसार उनके कारोबार, नौकरी, बाग, फसल और धन में कई गुना वृद्धि करेगा। इंशाअल्लाह।

किसी भी प्रकार के मार्गदर्शन के लिए कार्यालय मैनेजर, साप्ताहिक अखबार बदर से संपर्क करें।

संपर्क नंबर: 98156-39670

★ ★ ★



ख़ुत्बः जुमअः

सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 28 अगस्त 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेमिसाल उदारता और दानशीलता

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे को दुनिया में लहराने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो कोशिशें कीं, वे तो स्पष्ट हैं, लेकिन आप अपने उन मददगारों के भी बहुत आभारी होते थे, जिन्होंने आपके इस मिशन को पूरा करने के लिए किसी भी रूप में मदद की।

इसी सिलसिले में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 4 अक्टूबर 1899 ई. को एक विज्ञापन के माध्यम से आर्थिक सहायता के लिए अपील की, जिसमें आपने जमाअत के आर्थिक सहायता करने वाले सच्चे और निष्ठावान लोगों का ज़िक्र किया। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

"यह ख़ुदा तआला का नियम है कि हर ख़ुदा वाले गिरोह को अपनी शुरुआती हालत में चंदे की ज़रूरत पड़ती है। हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी कई बार सहाबा से चंदे लिए, जिनमें हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु सबसे बढ़कर थे। इसलिए मर्दाना हिम्मत के साथ मदद के लिए बिना देर किए कदम उठाना चाहिए।"

उस समय आपने लंगरखाने के लिए सहायता की अपील की थी, क्योंकि यह भी एक उद्देश्य था। मेहमान आते थे, ताकि वे इस्लाम के बारे में जानकारी हासिल करें और आपके दावे को सुनें। आपने फ़रमाया कि "हर व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार इस लंगरखाने के लिए मदद करे। मैं चाहता हूँ कि यदि संभव हो तो ऐसा प्रबंध हो जाए कि हम लंगरखाने की परेशानियों से मुक्त होकर अपने काम में पूरी तरह लगे रहें।"

अर्थात् आपका जो इस्लाम के प्रचार का काम था, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के संदेश को दुनिया तक पहुँचाने का काम था, उस ओर और अधिक ध्यान दिया जा सके। साथ ही, जो मेहमान इस उद्देश्य से आते हैं, उनके लिए आप अलग प्रबंध चाहते थे। बहरहाल, आप फ़रमाते हैं कि हम पूरी तरह अपने काम में लगे रहें, "हमारे समय का नुकसान न हो और जो लोग हमारी मदद करते हैं, वे आखिरकार ख़ुदा की मदद देखेंगे।"

फिर आप अलैहिस्सलाम ने आगे फ़रमाया:

"मैं यह बात लिखे बिना नहीं रह सकता कि इस सहायता और मेहनत में सबसे पहले हमारे सच्चे और निष्ठावान, ख़ुदा के लिए प्रेम करने वाले हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहिब हैं, जिन्होंने न केवल आर्थिक सहायता की, बल्कि दुनिया के तमाम संबंधों से अपना दामन छुड़ाकर, फकीरों का लिबास पहनकर और अपने वतन से हिजरत करके क़ादियान में आकर अपने जीवन के अंतिम दिन तक रहने का फैसला किया और हर समय उपस्थित रहते हैं। यदि मैं चाहूँ तो उन्हें पूर्व में भेज दूँ या पश्चिम में भेज दूँ।"

अर्थात् इस्लाम का संदेश पहुँचाने के लिए।

"मेरे निकट ये वे लोग हैं, जिनके बारे में 'बराहीने अहमदिया' में यह इल्हाम है:

اَصْحَابُ الصُّفَّةِ وَمَا اَدْرٰكَ مَا اَصْحَابُ الصُّفَّةِ۔"

अर्थात् सफ़्फ़ा वाले लोग, और तुम क्या जानते हो कि सफ़्फ़ा वाले कौन हैं?"

फिर आप फ़रमाते हैं:

"और हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब के बाद दूसरे स्थान पर ख़ुदा के लिए प्रेम करने वाले मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी हैं। ख़ुदा तआला ने पहले ही उन्हें दुनिया के पदों और पद-प्रतिष्ठा की चाह से दूर रखा है। लेकिन अब उन्होंने दुनियावी विचारों को भी पूरी तरह छोड़कर इस दरवाज़े पर अपना स्थान बना लिया है। वे दिन-रात अपनी क्षमता से बढ़कर काम करते हुए धर्म की सेवा कर रहे हैं और जुमे की नमाज़ में क़ुरआन शरीफ़ के बहुत से गहरे अर्थ और ज्ञान की बातें बयान करके मुसलमानों को लाभ पहुँचाते हैं।

इसी तरह मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब के शहर के हकीम फ़ज़लुद्दीन हैं। वे भी लगभग इसी स्थान पर रहते हैं और सेवाओं में लगे हुए हैं।

हमारे एक निष्ठावान मित्र डॉक्टर बूढ़े ख़ान साहिब दुनिया से विदा हो गए, लेकिन शुक्र की बात है कि चार और निष्ठावान डॉक्टर हमारी जमाअत में मौजूद हैं। वे हैं ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहिब लाहौरी, डॉक्टर मिर्ज़ा याक़ूब बेग साहिब कलानौरी, डॉक्टर मुहम्मद इस्माईल साहिब और डॉक्टर अब्दुल हकीम ख़ान साहिब।

इसी तरह कुछ और बहुत निष्ठावान लोग हैं, जिन्होंने यहाँ आकर रहना शुरू कर दिया है। इनमें मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब भी शामिल हैं। इसी तरह साहिबज़ादा सिराजुल हक़ साहिब सरसावी भी अपने वतन सरसावा से हिजरत करके क़ादियान आ गए हैं। इनके अलावा भी कई और लोग हैं।

हम दुआ करते हैं कि इन सभी लोगों की हिजरत उनके लिए मुबारक हो।

मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब तो हमारे इस सिलसिले के एक रोशन चिराग़ हैं। वे हर रोज़ क़ुरआन शरीफ़ और हदीस का पाठ पढ़ाते हैं और क़ुरआन शरीफ़ के इतने गहरे अर्थ और ज्ञान की बातें बयान करते हैं कि यदि यह ख़ुदा की मदद नहीं है, तो और क्या है?

हज़रत मौलवी साहिब और ख़ुदा के लिए प्रेम करने वाले मौलवी अब्दुल करीम साहिब दोनों दिल की सच्चाई से चाहते हैं कि क़ादियान में ही उनका जीवन बीते और क़ादियान में ही उनकी मृत्यु हो।

...और हमारी जमाअत के वे निष्ठावान लोग जो व्यापार में लगे हुए हैं, उनमें ख़ुदा के लिए प्रेम करने वाले सेठ अब्दुर्रहमान साहिब, व्यापारी मद्रास, प्रशंसा के योग्य हैं। उन्होंने सवाब कमाने के बहुत से अवसर प्राप्त किए हैं। वे इतने जोश से प्रेम करने वाले हैं कि इतनी दूर रहकर भी हमारे निकट हैं। वे हमारे सिलसिले के लंगरखाने की बहुत सहायता करते हैं। उनका सच्चा प्रेम, उनकी लगातार सेवाएँ और उनका विश्वास से भरा हुआ व्यवहार पूरी जमाअत के सामर्थ्य रखने वाले लोगों के लिए एक उदाहरण है, क्योंकि ऐसे लोग बहुत कम हैं।

वे हर महीने बिना नागा एक सौ रुपये भेजते हैं और आज तक कई बार केवल अपने प्रेम और निष्ठा के जोश में एक साथ पाँच सौ रुपये तक भेजते रहे हैं।"

उस समय यह बहुत बड़ी रकम थी, जिसे वे धर्म के प्रचार और मेहमानों की देखभाल के लिए भेजते थे।

"और हर महीने भेजे जाने वाले एक सौ रुपये इसके अतिरिक्त हैं।

इसी तरह ख़ुदा के लिए प्रेम करने वाले लाहौर के व्यापारी सेठ शेख रहमतुल्लाह साहिब भी हैं। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि शेख साहिब दिल और जान से हमसे प्रेम करते हैं। मेरे विरुद्ध जो फौजदारी के मुकदमे किए गए थे, उनमें उन्होंने अपने बहुत से रुपये खर्च करके मेरी सहायता की और प्रेम के जोश में दीवानों की तरह मेरी मदद के लिए भाग-दौड़ करते रहे। अब वे हमारे काम के लिए सैकड़ों रुपये खर्च करके लंदन में बैठे हैं। ख़ुदा तआला उन्हें जल्द से जल्द खैरियत और सलामती के साथ वापस लाए।" यह उस समय की बात है, जब वे लंदन गए हुए थे।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "यह भी ज़िक्र के योग्य है कि ख़ुदा के लिए प्रेम करने वाले सरदार नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब भी प्रेम और निष्ठा में बहुत आगे बढ़ गए हैं। सही समझ इस बात की गवाही देती है कि वे बहुत जल्द ऐसे निष्ठा और प्रेम के स्तर तक पहुँच जाएँगे, जिस पर दूसरों को रश्क आएगा। वे हमेशा अपनी क्षमता के अनुसार आर्थिक सहायता भी करते रहे हैं। उम्मीद है कि वे ख़ुदा की राह में अपने माल को इससे भी अधिक कुर्बान करेंगे। ख़ुदा तआला हर व्यक्ति के कामों को देखता है।"

और फ़रमाया: "मुझे यह कहने और लिखने की ज़रूरत नहीं..."

इसी तरह आपने फ़रमाया: "और भी बहुत से निष्ठावान लोग हैं..."

लेकिन अफ़सोस कि यदि मैं उनके नाम लिखूँ तो यह विज्ञापन बहुत लंबा हो जाएगा। आप फ़रमाते हैं:

"मैं उन सबके लिए दुआ करता हूँ कि ख़ुदा उन्हें दोनों जहानों की खुशियाँ प्रदान करे। वे ख़ुदा के लिए जो कुछ करते हैं या भविष्य में करेंगे, वह सब ख़ुदा तआला की नज़र के सामने है।"

(मजमूआ इश्तिहारात, जिल्द द्वितीय, पृष्ठ 542 से 546, संस्करण 2019 ई.)

ये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे गुलाम द्वारा अपने मददगारों के प्रति आभार प्रकट करने के तरीके थे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम किसी की छोटी-सी सेवा पर भी बहुत अधिक धन्यवाद दिया करते थे।

इसी बारे में हज़रत मुंशी महबूब आलम साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हमारे मोहल्ले में एक गैर-अहमदी रहता था, जो फ़ालूदा बनाया करता था। जब हज़रत साहिब अलैहिस्सलाम ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब के मकान पर तशरीफ़ लाए, तो उस फ़ालूदा बनाने वाले ने मुझसे कहा कि यदि आप हज़रत से अनुमति ले दें, तो मैं आपको फ़ालूदा पिलाना चाहता हूँ।

चुनाँचे मैंने हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम की सेवा में अर्ज़ किया। आपने अनुमति दे दी। वह सारा सामान लेकर वहाँ आ गया। हज़रत साहिब अलैहिस्सलाम ख़्वाजा कमालुद्दीन के आँगन में एक पलंग पर बैठे हुए थे। मैंने फ़ालूदा बनाने वाले को आपके सामने पेश किया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उससे फ़रमाया कि फ़ालूदा बनाएँ। वह बाहर बैठ गया और उसने फ़ालूदा का एक प्याला बनाकर हज़रत की सेवा में पेश किया। आपने उसे पिया और पसंद करते हुए फ़रमाया कि बहुत अच्छा है।

फिर उसने दस-बारह प्याले अंदर भेजे और सभी को फ़ालूदा पिलाया। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दो रुपये निकालकर मुझे दिए और फ़रमाया कि ये उसे दे दें।

उस समय उन दो रुपयों की बहुत कीमत थी। मैं रुपये लेकर उसके पास गया, लेकिन उसने लेने से इनकार कर दिया और मुझसे कहा कि मुझे हज़रत साहिब की सेवा में ले चलें।

चुनाँचे मैं उसे हज़रत की सेवा में ले गया। उसने हज़रत साहिब के सामने हाथ जोड़कर कहा कि मुझे दो रुपये नहीं चाहिए। मैंने तो फ़ालूदा उपहार के रूप में पेश किया था।

उसके बहुत आग्रह करने पर हज़रत साहिब ने फिर उसे वे रुपये नहीं दिए, बल्कि उसके लिए दुआ की और फ़रमाया:

جَزَاكُمُ اللّٰهُ أَحْسَنَ الْجَزَاءِ

अर्थात् ख़ुदा आपको इसका सबसे अच्छा बदला दे।

वे कहते हैं कि इस दुआ की बरकत यह है कि उस लड़के के बच्चे बड़े अच्छे पदों पर नियुक्त हैं।

(रिवायात असहाब अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 278-279 से लिया गया)

हज़रत मौलवी इब्राहीम साहिब बक़ापुरी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं:

"एक बार जमाअत सियालकोट ने, जिसमें हज़रत मीर हामिद शाह साहिब मरहूम, चौधरी नसरुल्लाह ख़ान साहिब मरहूम और यह विनम्र सेवक शामिल थे, कुछ रुपये उपहार के रूप में हज़रत की सेवा में पेश किए।

हज़रत अलैहिस्सलाम ने उस रूमाल को लिया, जिसमें रुपये बँधे हुए थे। पहले अल्हम्दुलिल्लाह कहा और फिर जज़ाकुमुल्लाह फ़रमाया। इससे हमारे ईमान में एक तरह की बढ़ोतरी हुई कि हज़रत ने पहले ख़ुदा का शुक्र अदा किया और फिर हमारे लिए दुआ की।"

(रिवायात असहाब अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 56)

पहले भी एक बार बयान कर चुका हूँ कि हज़रत ने फ़रमाया था कि पहले अल्लाह का शुक्र अदा करो, फिर उसके बंदों का शुक्र अदा करो।

(माख़ूज़ अज़ हयाते क़ुदसी, पृष्ठ 134)

एक घटना हज़रत ज़ुल्फ़िकार अली ख़ान गौहर साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक बार हज़रत अलैहिस्सलाम नीचे की मंज़िल पर स्थित बैतुद्दुआ से मेहंदी लगाने के कारण लगभग दस बजे बाहर तशरीफ़ लाए। बैतुद्दुआ के साथ एक छोटी कोठरी थी, जिसके एक दरवाज़े से आप बाहर आए। आपकी दाढ़ी और सिर के बालों पर रंग लगा हुआ था। उस समय मेहंदी लगाई जाती थी और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी मेहंदी लगाया करते थे।

वे कहते हैं कि उस कोठरी का एक दरवाज़ा आँगन में खुलता था और दूसरा मेरे कमरे की तरफ़ था। पास ही मेरा निवास होने के कारण मैं उस कोठरी में हज़रत की आवाजाही का इंतज़ार कर रहा था।

जब हज़रत बैतुद्दुआ से बाहर तशरीफ़ लाए, तो चारपाई पर बैठ गए और मुझसे फ़रमाया कि मौलवी सय्यद सरवर शाह साहिब से कह दें कि हमारे लिए कुछ खाना यहाँ ले आएँ।

उस समय मेहमान आए हुए थे और सभी के लिए खाना एक साथ पकता था। खाने के प्रबंध की ज़िम्मेदारी सरवर शाह साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास थी।

वे कहते हैं कि मैंने जाकर हज़रत का संदेश पहुँचा दिया। उसी समय हम लोग खाना खाकर उठे थे। मुश्किल से दस मिनट गुज़रे होंगे, लेकिन खाना पूरी तरह समाप्त हो चुका था। कुछ भी बाकी नहीं था। सभी लोग खाना खा चुके थे।

जब मैंने संदेश दिया, तो मौलवी सरवर शाह साहिब का चेहरा सफ़ेद पड़ गया। बहरहाल, उन्होंने एक छोटे प्याले में दूध लिया और एक तश्तरी में तीन टोस्ट रखकर चीनी के साथ ले आए। उनका चेहरा उतरा हुआ था और वे बहुत दुखी थे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने खाना माँगा है, लेकिन खाना मौजूद नहीं है।

उन्होंने अर्ज़ किया कि हज़रत! इस समय खाने के लिए कुछ और मौजूद नहीं है। ज़ुल्फ़िकार अली ख़ान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मुझे बहुत हैरानी हुई कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए खाना नहीं रखा गया। यह कैसा प्रबंध है?

हज़रत ने बहुत आभार के साथ, जिसका असर आपके चेहरे से भी दिखाई दे रहा था, उन दो टोस्ट को उठाया, उन पर चीनी लगाकर खा लिया और उसके बाद पानी पी लिया। वे कहते हैं कि उस समय मेरे मन में विचार आया कि ख़ुदा तआला ने यह भूल इसलिए करवाई है, ताकि हज़रत के सब्र, शुक्र और उनके ऊँचे दर्जे का हाल दुनिया के सामने प्रकट हो।

(माख़ूज़ अज़ रिवायात असहाब अहमद, जिल्द 3, पृष्ठ 54)

सहाबा छोटी-छोटी बातों को भी ध्यान से लिखा करते थे।

7 अगस्त 1900 ई. को हज़रत ने नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु को धन्यवाद का पत्र लिखते हुए फ़रमाया। उन्होंने कपड़ों का कुछ उपहार भेजा था। आपने लिखा:

"आपका कीमती और उम्दा कपड़ों का उपहार, जो आपने अत्यंत प्रेम और निष्ठा के साथ दिया था, मुझे मिल गया है। मैं इसका धन्यवाद करता हूँ। हर कपड़े को देखकर मालूम होता है कि हमारे प्रेमी ने बहुत मेहनत और निष्ठा से इन्हें तैयार करवाया है।

ख़ुदा तआला इसके बदले आप पर अपने अनगिनत और अनजाने करम और कृपा करे और आपको पूरी तरह तक़वा का लिबास पहनाकर औलिया और नेक लोगों के रंग में रंग दे।"

(असहाब अहमद, जिल्द द्वितीय, पृष्ठ 686-687)

अब आपने आपको पहनने के लिए बाहरी लिबास दिया था, तो उसका धन्यवाद करने के साथ आपने यह दुआ भी की कि ख़ुदा तआला आपको पूरी तरह तक़वा का लिबास प्रदान करे और नेक लोगों के रंग में रंग दे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत मुंशी अहमद जान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने पत्र में लिखते हैं:

"मेरे आदरणीय और प्रिय भाई मुंशी अहमद जान साहिब, ख़ुदा तआला आपको सलामत रखे और ख़ुदा आपको इसका सबसे अच्छा बदला दे।

आप पर सलामती हो और ख़ुदा की रहमतें और बरकतें हों।

आपका पत्र मिल गया। ख़ुदा की कृपाओं का शुक्र अदा नहीं किया जा सकता, जिसने इस सबसे छोटे बंदे के लिए ऐसे सच्चे दिल वाले मित्र प्रदान किए, जिनका अस्तित्व मेरे जैसे तुच्छ व्यक्ति के लिए इज़्ज़त और गर्व का कारण है। ख़ुदा आपको ख़ुश और प्रसन्न रखे और आपके दिल से की गई इन कोशिशों का बदला प्रदान करे।"

आप अत्यंत विनम्रता के साथ फ़रमाते हैं:

"यह विनम्र सेवक बहुत निकम्मा और तुच्छ है। यह सब कुछ सबसे अधिक रहम करने वाले ख़ुदा का एहसान और कृपा है कि वह इस अयोग्य व्यक्ति पर, जिसके पास इसका कोई अधिकार नहीं, अपनी बहुत-सी कृपाओं की वर्षा कर रहा है।"

मैं एक के बाद एक गलतियाँ करता हूँ, लेकिन ख़ुदा तआला लगातार एहसान करता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दर्जे को देखिए और फिर आपकी विनम्रता को देखिए।

आप फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला "गलती पर गलती देखता है, लेकिन एहसान पर एहसान करता है। बुराई पर बुराई देखता है, लेकिन इनाम पर इनाम देता है। वास्तव में वह अत्यंत दयालु और कृपा करने वाला है। मैं ऐसी ज़बान कहाँ से लाऊँ, जिससे उसका शुक्र अदा कर सकूँ?

यह विनम्र सेवक तुच्छ, अपमानित, साधनहीन और पूरी तरह गरीब है। ख़ुदा ने मुझे मिट्टी में पड़ा हुआ पाया और उठा लिया। मुझे बिल्कुल अयोग्य पाया, फिर भी मेरी कमियों पर पर्दा डाला। मेरी कमज़ोरी देखकर ख़ुद ही मुझे ताक़त दी और मेरी अज्ञानता देखकर ख़ुद ही मुझे ज्ञान प्रदान किया। मुझ पर ऐसी कृपाएँ कीं, जिन्हें मैं गिन नहीं सकता।

उसकी कृपाओं का एक रूप यह भी है कि उसने आप जैसे बुज़ुर्ग भाइयों के दिलों में इस सबसे छोटे सेवक की मोहब्बत डाल दी।"

यह अपने मददगारों के प्रति आपके आभार प्रकट करने का तरीका था।

आप फ़रमाते हैं: "इसलिए उसके एहसानों का तकाज़ा है कि वह इस प्रेम को बढ़ाए और उन सभी लोगों पर कृपा करे, जिन्हें उसने इस सिलसिले में शामिल किया है।

इस पत्र को लिखने के बाद किसी बुज़ुर्ग का यह शेर इल्हाम के रूप में हुआ।"

आपने लिखा: "हरगिज़ नमीरेद आँकि दिलश ज़िन्दा शुद बइश्क़

सब्त अस्त बर जरीदा-ए-आलम दवामे मा।" अर्थात् वह व्यक्ति कभी नहीं मरता, जिसका दिल प्रेम से जीवित हो गया हो। दुनिया के इतिहास के पन्नों पर हमारी हमेशा रहने वाली ज़िंदगी दर्ज हो चुकी है।

(मकतूबात-ए-अहमद, जिल्द तृतीय, पृष्ठ 25-26)

इसी तरह हज़रत क़ाज़ी ज़हूरुद्दीन अकमल साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु को लिखे एक पत्र में आप फ़रमाते हैं। उन्होंने आपकी सहायता में कुछ किताबें भेजी थीं। आपने लिखा:

"आपकी तीनों किताबें आपकी ओर से उपहार के रूप में मुझे मिल गई हैं। खुदा आपको इसका अच्छा बदला दे। मैंने तीनों को थोड़ा-थोड़ा देख लिया है। बयान बहुत अच्छा और दलीलों से भरा हुआ है। खुदा तआला आपको इसका अच्छा बदला दे। आमीन।

आपको हर उचित अवसर पर इनका प्रचार करना चाहिए, ताकि आपको दोहरा सवाब मिले।"

(मकतूबात-ए-अहमद, जिल्द पंचम, पृष्ठ 245)

इसी तरह आपने हज़रत डॉक्टर ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु को एक पत्र लिखा। हज़रत ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहिब, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु के ससुर और हज़रत उम्मे नासिर के पिता थे।

आपने फ़रमाया: "मेरे प्रिय भाई डॉक्टर ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहिब, खुदा आपको सलामत रखे।

आप पर सलामती हो और खुदा की रहमतें और बरकतें हों। आपकी ओर से भेजे गए पचास रुपये मुझे मिल गए हैं। ऐसे कठिन और ज़रूरत के समय में, जब बुरी नीयत रखने वाले ईर्ष्यालु लोगों ने मेरे विरुद्ध अदालत में मुकदमा कर रखा है, आपका लगातार आर्थिक सहायता करना धन्यवाद के योग्य है। खुदा आपको इसका सबसे अच्छा बदला दे।

अब मुकदमे की तारीख 24 फ़रवरी 1899 ई. है। संभवतः उस दिन रविवार होगा और ईद होगी। ऐसी स्थिति में अगले दिन सोमवार को पठानकोट में मुकदमे के लिए जाना होगा। खुदा बेहतर जानता है।"

फिर आप फ़रमाते हैं: "अब मैंने यह वादा कर लिया है कि कुछ समय तक आपके लिए दुआ करता रहूँगा।"

आभार प्रकट करते हुए आपने फ़रमाया कि मैं कुछ समय तक आपके लिए दुआ करता रहूँगा।

"खुदा तआला आपको दूर रहने और बिछड़ने की स्थिति से खैरियत और सलामती के साथ छुटकारा दिलाए। आमीन, फिर आमीन।"

क्योंकि उनकी नियुक्ति किसी दूर के क्षेत्र में थी और वे वहाँ से वापस आना चाहते थे।

(मकतूबात-ए-अहमद, जिल्द चतुर्थ, पृष्ठ 214)

इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत साहिबज़ादा सिराजुल हक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने पत्र में लिखते हैं:

"मेरे आदरणीय भाई साहिबज़ादा सिराजुल हक़ साहिब की सेवा में।

आप पर सलामती हो और खुदा की रहमतें और बरकतें हों।

आपका पत्र मिल गया। आपने जो पगड़ी और इत्र उपहार के रूप में दिया है, उसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। इस मित्रतापूर्ण उपहार के लिए आपका धन्यवाद करता हूँ। खुदा आपको इसका सबसे अच्छा बदला दे और दुनिया तथा आख़िरत में आप पर कृपा करे। खुदा तआला आपको बहुत खुश रखे और दुनिया तथा धर्म की सभी परेशानियों से बचाए।"

(मकतूबात-ए-अहमद, जिल्द तृतीय, पृष्ठ 110)

आभार प्रकट करने के साथ-साथ आप हर व्यक्ति के धर्म में तरक्की के लिए भी दुआ किया करते थे।

सैयद महमूद आलम साहिब बयान करते हैं: "हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बताया करते थे कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अरबी भाषा में ईदुल-अज़हा का ख़ुत्बा पढ़ाया, तो बाद में जब आपसे इसकी स्थिति पूछी गई, तो आपने फ़रमाया कि फ़रिश्ते मेरे सामने मोटे-मोटे अक्षरों में लिखी हुई तख्तियाँ लाते जाते थे और मैं उन्हें देखकर पढ़ता जाता था। एक तख्ती आती और जब मैं उसे पढ़ चुका होता, तो दूसरी तख्ती आ जाती और पहली चली जाती। इस तरह तख्तियों का सिलसिला चलता रहा।

जब लिखने वालों में से कोई पूछता, तो गई हुई तख्ती फिर वापस आ जाती और उसे देखकर मैं बता देता।"

आपने लिखने के लिए दो व्यक्तियों को बैठाया हुआ था, इसलिए वे दोबारा पूछते थे।

जब ख़ुत्बा समाप्त हुआ, तो आप सज्दा-ए-शुक्र में गिर पड़े। आपके साथ सभी उपस्थित लोगों ने भी सज्दा-ए-शुक्र अदा किया। सज्दे से सिर उठाकर हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अभी मैंने लाल अक्षरों में लिखा हुआ देखा है: "मुबारक।" यह मानो स्वीकार किए जाने की निशानी है।

(तज़्किरा, पृष्ठ 334-335 और हाशिया, संस्करण 2023 ई.)

हज़रत मियाँ फ़ीरोज़ुद्दीन साहिब बयान करते हैं: "हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने सियालकोट में मीर हुसामुद्दीन साहिब के मकान की छत पर अपना व्याख्यान लिखा था। चार दवातें चारों दीवारों पर रखी हुई थीं।"

छोटी-छोटी दीवारों पर दवातें रखी हुई थीं और आप टहलते हुए लिखा करते थे।

वे कहते हैं: "लगभग अस्र का समय था। हज़रत टहलते-टहलते लिखते थे और कभी-कभी सज्दे में भी गिर जाते थे।"

अर्थात् उस समय खुदा तआला कोई विशेष बात समझाता होगा, तो आप सज्दा-ए-शुक्र अदा करते थे। लिखते हुए रुककर सज्दे में चले जाते थे।

वे कहते हैं: "यह सारा दृश्य हमने अपने मकान की छत पर खड़े होकर देखा था। बहुत से अन्य लोग भी यह दृश्य देखने के लिए हमारे मकान पर इकट्ठा हो गए थे। हमारा मकान उस मकान के पास भी था और ऊँचा भी था। वहाँ से सारा दृश्य दिखाई देता था।"

अर्थात् किस तरह आप किताब लिख रहे थे और साथ-साथ खुदा तआला का शुक्र भी अदा कर रहे थे।

(रिवायात असहाब अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 375)

आपके आभार प्रकट करने के गुण का वर्णन करते हुए एक सहाबी हज़रत ख़ैरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं:

"एक बार मसीह अलैहिस्सलाम हमारे गाँव क़ादिराबाद तशरीफ़ लाए। मेरी माता ताज बीबी साहिबा ने एक थाल में चीनी भरकर दी। हज़रत ने वह चीनी दादी जान की झोली में डाल दी और खुदा आपको इसका अच्छा बदला दे कहा तथा हमारे लिए दुआ की।"

(रिवायात असहाब अहमद, जिल्द 3, पृष्ठ 89)

आप छोटी-से-छोटी चीज़ पर भी धन्यवाद देते थे।

हाजी मुहम्मदुद्दीन साहिब बयान करते हैं: "एक बार मुझे मालूम हुआ कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम किसी अवसर पर सियालकोट तशरीफ़ ला रहे हैं। तय तारीख़ पर मैं भी आपके दर्शन की इच्छा से वहाँ पहुँच गया। हज़रत एक मकान की ऊपरी मंज़िल पर बैठे हुए थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रेमी नीचे बड़ी संख्या में दर्शन के इंतज़ार में खड़े थे।

इतने में हज़रत नीचे तशरीफ़ ले आए और उपस्थित लोगों को दर्शन का अवसर प्रदान किया।

जब एक बूढ़ा व्यक्ति हज़रत से मिला, तो ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। हज़रत ने उसे तसल्ली देते हुए उसके हालात पूछे। उसने अर्ज़ किया कि हज़रत! मैं हज़रत इमाम महदी के आने तक जीवित रहने की दुआ किया करता था।

हज़रत ने फ़रमाया कि बाबा! फिर तो खुदा तआला ने आपकी दुआ स्वीकार कर ली।

इस पर वह बहुत खुश हुआ और अपने एक पोते को हज़रत के सामने पेश करके अर्ज़ करने लगा कि इस पर अपना मुबारक हाथ फेर दें और इसके लिए दुआ करें। हज़रत ने दुआ की और ऊपर तशरीफ़ ले गए।"

इसके बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आभार प्रकट करने की घटना बयान करते हुए वे कहते हैं:

"जाते समय इत्तिफ़ाक़ से आपका एक जूता, जो बिल्कुल सादा था, पैर से उतरकर नीचे गिर गया। मैंने उसे उठाया और अपने हाथ से आपके पैर में पहना दिया। इस पर हज़रत ने मुस्कुराते हुए प्रेम भरे शब्दों में फ़रमाया: 'जज़ाकल्लाह।'"

अर्थात् खुदा आपको इसका अच्छा बदला दे। इस तरह आपने बहुत धन्यवाद दिया।

(रिवायात असहाब अहमद, जिल्द 5, पृष्ठ 334)

आप कोई भी अवसर धन्यवाद देने का हाथ से जाने नहीं देते थे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत मुंशी रुस्तम अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने एक पत्र में लिखते हैं:

"मुंशी रुस्तम अली साहिब, खुदा आपको सलामत रखे।

आप पर सलामती हो और खुदा की रहमतें तथा बरकतें हों।

आपकी ओर से भेजे गए पचास रुपये मियाँ इमामुद्दीन साहिब के हाथों पहुँच गए हैं। आपने और चौधरी मुहम्मद बख़्श साहिब ने जितनी कोशिश की है, खुदा तआला आपको उसका बड़ा बदला दे और दुनिया तथा आख़िरत में कामयाब करे।

इस समय, पत्र लिखने तक, यहाँ हर तरह से खैरियत है।" इसके बाद आपने अपनी स्थिति की जानकारी भी दी।

(मकतूबात-ए-अहमद, जिल्द द्वितीय, पृष्ठ 467-468)

आप हर बात पर और हर व्यक्ति की छोटी-सी चीज़ पर भी शुक्र अदा किया करते थे।

एक घटना हज़रत मियाँ मीराँ बख़्श साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं:

"मैं लगभग 1897 या 1898 ई. में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद और महदी मसऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आया, लेकिन कुछ समय तक इस बात का ज़िक्र अपने पिता से नहीं किया। आखिर यह बात कब तक छिप सकती थी। जब भेद खुल गया, तो मेरे पिता ने मुझे साफ़ जवाब देकर घर से निकाल दिया और कहा कि तुम अहमदी हो गए हो, अब मेरे घर से निकल जाओ।

मैंने खुदा, जो रोज़ी देने वाला है, पर भरोसा करके अलग दुकान किराये पर ले ली। आर्थिक तंगी तो थी, लेकिन दिल में यह इच्छा थी कि किसी तरह अपनी हैसियत के अनुसार हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम के लिए एक पोशाक तैयार करूँ, उसे अपने हाथ से सिलूँ और हज़रत की सेवा में पेश करूँ, क्योंकि मैं दर्ज़ी था।

इसी विचार से मैंने मलमल का एक कुर्ता, लट्ठे की एक शलवार, काले रंग का एक कोट और मलमल की एक पगड़ी खरीदी। अपने हाथ से सिलकर पोशाक तैयार की और इधर-उधर से किराये के पैसे जुटाकर क़ादियान पहुँच गया।

अगले दिन शुक्रवार था। मेरी इच्छा थी कि यदि संभव हो, तो मैं अपना यह गरीबाना उपहार उसी दिन हज़रत की सेवा में पेश कर दूँ, ताकि शायद हज़रत जुमे की नमाज़ से पहले ही इसे पहनकर इस गरीब के दिल को खुश कर दें।

इसी सोच-विचार में मैं क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन साहिब की दुकान पर पहुँचा और उनके सामने अपनी दिली इच्छा प्रकट कर दी। वे सुनते ही कहने लगे कि आओ मियाँ, मैं तुम्हें हज़रत की सेवा में पहुँचा देता हूँ।

चुनाँचे वे उसी समय उठे और मुझे हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम की सेवा में ले गए। उस समय हज़रत एक तख़्तपोश पर बैठे कुछ लिख रहे थे और ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब तख़्तपोश के सामने एक चटाई पर बैठे थे। हम दोनों भी ख़्वाजा साहिब के पास बैठ गए।

ख़्वाजा साहिब ने पूछा कि इस समय आप कैसे आए हैं? क़ाज़ी साहिब ने मेरी इच्छा बता दी। ख़्वाजा साहिब कुछ देर खामोश रहे, फिर मेरी ओर देखकर बोले कि क्यों मियाँ, क्या मैं तुम्हारी वकालत कर दूँ?

ख़्वाजा साहिब वकील थे, इसलिए इस अवसर पर भी उन्होंने अपने पेशे के शब्द इस्तेमाल किए। मैंने कहा कि यह तो आपकी बहुत मेहरबानी होगी। आप वकालत कर दें।

इस पर ख़्वाजा साहिब ने मुझसे कपड़े लेकर हज़रत अलैहिस्सलाम की सेवा में पेश कर दिए और साथ ही अर्ज़ किया कि हज़रत! इस लड़के की इच्छा है कि आप ये कपड़े पहनकर जुमे की नमाज़ पढ़ें।

ख़्वाजा साहिब की यह बात सुनकर हज़रत फ़ैज़ के स्रोत अलैहिस्सलाम ने कपड़े उठाए और पहनने शुरू कर दिए। लेकिन जब कोट पहना, तो वह बहुत तंग था।

मैंने अर्ज़ किया कि हज़रत! कोट बहुत तंग है। यदि आप इसे उतार दें, तो मैं इसे थोड़ा खोल दूँ। हज़रत ने कोट उतारकर मुझे दे दिया। मैंने कहा कि मैं इसे ठीक कर देता हूँ, क्योंकि यह कुछ तंग है। मैं जल्दी से उठकर बाज़ार आया और एक दर्ज़ी की दुकान पर बैठकर कोट की पीठ की सारी सिलाई खोल दी। फिर हज़रत की सेवा में वापस आ गया।

हज़रत ने दोबारा कोट पहना, लेकिन फिर भी उसके बटन आपकी इच्छा के अनुसार आसानी से बंद नहीं हो रहे थे। इसके बावजूद हज़रत ने मेरा दिल रखने के लिए खींचकर बटन लगा लिए और इस बात की परवाह नहीं की कि ये कपड़े पहनने के योग्य हैं या नहीं।"

(माख़ूज़ अज़ रिवायात असहाब अहमद, जिल्द 1, पृष्ठ 368-369)

आपने उन कपड़ों को पहनकर उस लड़के की भावनाओं का भी ध्यान रखा, जो नया-नया अहमदी हुआ था और उपहार लेकर आया था। फिर आपने उसका बहुत धन्यवाद भी किया।

हज़रत मियाँ सैफ़ुल्लाह साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं:

"एक बार मैं क़ादियान गया। किसी व्यक्ति ने हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम के सामने पचास-साठ रुपये की ढेरी लगा दी, लेकिन हज़रत ने उस ओर ध्यान भी नहीं दिया।

आम तौर पर आप लोगों की ओर से दी जाने वाली चीज़ों पर धन्यवाद दिया करते थे, लेकिन संभवतः इस मामले में कोई विशेष कारण था। बहरहाल, वे कहते हैं कि उस व्यक्ति ने नकद रकम दी, मगर हज़रत ने कोई ध्यान नहीं दिया।

इतने में एक बूढ़ी औरत, जो संभवतः हिंदू थी, अपने साथ एक बच्चे को लेकर आई। उसने कपड़े में गुड़ की एक डली बाँध रखी थी। उस औरत ने अर्ज़ किया कि हज़रत! यह बच्चा आपके लिए गुड़ की डली लाया है। आप इसके लिए दुआ करें।

हज़रत ने फ़रमाया कि बहुत अच्छा। आप बहुत खुश हुए और बच्चे के हाथ से कपड़े समेत गुड़ की डली ले ली और उसे अपने कंधे पर डाल लिया।"

(रिवायात असहाब अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 453)

इस तरह आपने उस गरीब बच्चे का मामूली-सा उपहार भी स्वीकार करके उसकी बहुत कद्र की, उसका धन्यवाद किया और उसके लिए दुआ भी की।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अहमदी जमाअत के नाम एक पत्र में फ़रमाते हैं:

"सबसे पहले मेरे दिल में खुदा तआला का शुक्र जोश मारता है, जिसने मेरी जमाअत को सच्ची श्रद्धा, प्रेम और हमदर्दी प्रदान की है। यदि खुदा तआला की कृपा उनके साथ न होती, तो उन्हें यह ताक़त कभी न मिलती कि वे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के नक्शेकदम पर चलते हुए इस हद तक आज्ञापालन करते कि अपनी आर्थिक परेशानियों और कम आमदनी के बावजूद अपनी ताक़त से बढ़कर आर्थिक सेवा में लगे रहते।

मैं दुआ करता हूँ कि खुदा तआला उनके सभी माल में बरकत दे और धर्म के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए वे जो मदद और सहायता कर रहे हैं, खुदा तआला उसे दोनों जहानों में उनकी भलाई का कारण बनाए।"

(मकतूबात-ए-अहमद, जिल्द 5, पृष्ठ 365)

फिर नसीहत करते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"खुदा तआला ने जिन लोगों पर कृपा की है, उसका शुक्र अदा करने का सही तरीका यही है कि वे उसकी मख़लूक़ के साथ एहसान और अच्छा व्यवहार करें, खुदा की दी हुई कृपा पर घमंड न करें और जंगली लोगों की तरह गरीबों को कुचल न डालें।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 7, पृष्ठ 314, संस्करण 2022 ई.)

अर्थात् आपने गरीबों की मदद करने की ओर भी ध्यान दिलाया।

खुदा तआला से ज्ञान पाकर आप लोगों के मामलों के बारे में भी कभी-कभी पहले ही सूचना दे देते थे। इसी तरह विरोधियों के बारे में खुदा तआला से जानकारी पाकर बताते थे कि उनके साथ क्या-क्या होगा। लेकिन कभी-कभी खुदा तआला की हिकमत के अनुसार उन बातों के पूरा होने में समय लग जाता था। ऐसे अवसरों पर आप बेचैन हो जाते थे और दुआओं में लग जाते थे, क्योंकि आपको चिंता होती थी कि विरोधी इस बात पर शोर मचाएँगे। लेकिन जब वह बात पूरी हो जाती, तो आप अत्यंत आभार के साथ खुदा तआला के सामने सज्दे में गिर पड़ते थे।

इसी बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"एक बार मैंने बसम्बर दास, भाई शरमपत खत्री, के बारे में एक भविष्यवाणी की थी कि वह इस फौजदारी के मुकदमे से, जो उसके विरुद्ध बनाया गया था, बरी तो नहीं होगा, लेकिन उसकी आधी सज़ा माफ़ हो जाएगी।

इसके बाद ऐसा हुआ कि जब बसम्बर दास आधी सज़ा काटकर रिहा हो गया, जैसा कि पहले भविष्यवाणी में बताया गया था, तो उसके वारिसों ने गलत रूप से यह मशहूर कर दिया कि बसम्बर दास बरी हो गया है।

रात का समय था और मैं अपनी बड़ी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने गया था। जब अली मुहम्मद नाम का एक व्यक्ति, जो क़ादियान का रहने वाला मुल्ला था, मस्जिद में आया और उसने बताया कि बसम्बर दास बरी हो गया है और बाज़ार में लोग उसे मुबारकबाद दे रहे हैं, तो यह खबर सुनते ही मुझे बहुत सदमा पहुँचा।

मेरे दिल में बेचैनी पैदा हुई कि अब पक्षपाती हिंदू इस बात पर हमला करेंगे कि आपने तो कहा था कि बसम्बर दास बरी नहीं होगा, लेकिन अब देखो, वह बरी हो गया है।

इस चिंता के कारण नमाज़ की एक-एक रकअत मुझे एक-एक साल के बराबर लगने लगी। जब नमाज़ में किसी रकअत के बाद मैं सज्दे में गया, तो उस समय मेरी बेचैनी अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी।

तब सज्दे की हालत में ही खुदा ने ऊँची आवाज़ में मुझे संबोधित करके फ़रमाया:

لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى۔

अर्थात् डर मत, निश्चय ही तू ही विजयी है।

इसके बाद मैं इंतज़ार करता रहा कि यह भविष्यवाणी किस तरह पूरी होगी, लेकिन कोई निशानी दिखाई नहीं दी। मैं बार-बार शरमपत से पूछता था कि क्या यह सच है कि बसम्बर दास बरी हो गया है? वह यही जवाब देता था कि वह वास्तव में बरी हो गया है। मुझे झूठ बोलने की क्या ज़रूरत थी?

वह हिंदू यही कहता था। मैं गाँव में भी जिससे पूछता, वह यही कहता कि हमने भी सुना है कि वह बरी हो गया है।

इसी तरह लगभग छह महीने या कुछ कम-ज्यादा समय गुज़र गया। शरारती लोग मज़ाक उड़ाते और हँसते थे, जैसा कि उनकी पुरानी आदत है। लेकिन शरमपत ने मेरा मज़ाक नहीं उड़ाया। इससे मुझे विश्वास हुआ कि उसने मेरे साथ शराफ़त का व्यवहार किया है।

इसके बावजूद मैं उसके सामने शर्मिंदा होता था, क्योंकि मैंने उसे बहुत ज़ोर देकर बताया था कि उसका भाई बरी नहीं होगा, लेकिन अब स्थिति इसके विपरीत

दिखाई दे रही थी।

फिर भी अपने खुदा पर मेरा पक्का ईमान था और मुझे विश्वास था कि खुदा अपनी कुदरत का कोई दृश्य दिखाएगा। संभव है कि बरी होने के बाद वह फिर से पकड़ा जाए। लेकिन मुझे यह मालूम नहीं था कि उसके बरी होने की खबर ही झूठी थी।

इसके बाद ऐसा हुआ कि सुबह लगभग आठ बजे बटाला का एक तहसीलदार, जिसका नाम हाफ़िज़ हिदायत अली था, दौरे पर क़ादियान आया। क्योंकि क़ादियान तहसील बटाला के अंतर्गत आता है। वह हमारे मकान पर आया। अभी वह घोड़े से उतरा भी नहीं था कि कुछ हिंदू, जैसा कि उनका रिवाज है, उसे सलाम करने के लिए आ गए। उनमें बसम्बर दास भी था।

तहसीलदार ने बसम्बर दास को देखकर कहा कि बसम्बर दास! हमें इस बात की खुशी है कि तुम जेल से रिहा हो गए हो, लेकिन अफ़सोस कि तुम बरी नहीं हुए।

यह सुनते ही मैंने सज्दा-ए-शुक्र अदा किया और तुरंत शरमपत को बुलाकर कहा कि तुम इतने समय तक मुझसे झूठ क्यों बोलते रहे कि बसम्बर दास बरी हो गया है? तुमने मुझे नाहक दुख दिया।

उसने जवाब दिया कि एक मजबूरी के कारण मुझे यह झूठ बोलना पड़ा। वह मजबूरी यह थी कि हमारी जाति में रिश्ते-नाते तय करते समय छोटी-छोटी बातों पर भी ऐतराज़ किए जाते हैं। यदि किसी की बुरी चाल-चलन साबित हो जाए, तो लड़कियों के रिश्ते मिलना मुश्किल हो जाता है।

इसी मजबूरी के कारण मैं वास्तविकता के विरुद्ध बोलता रहा और गलत खबर फैलाता रहा।"

(हक़ीक़तुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 314-315; बराहीने अहमदिया, भाग चतुर्थ, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 1, पृष्ठ 657, हाशिये के हाशिये का नोट 4)

नोट: हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी किताबों, जैसे बराहीने अहमदिया, तिरयाक़ुल क़ुलूब और नुज़ूलुल मसीह आदि में यह नाम "बशम्बर दास" लिखा है। केवल हक़ीक़तुल वह्यी में इसे सीन से "बसम्बर दास" लिखा है।

हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम अपने एक निशान का ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं: "एक ऐसी भविष्यवाणी, जो पंडित दयानंद के अनुयायी कुछ आर्यों के सामने पूरी हुई, उसकी स्थिति से परिचित होना पाठकों के लिए लाभ से खाली नहीं है। इसलिए यदि इसे लिखने में कुछ विस्तार भी हो जाए, तो इस्लाम की महानता से अनजान लोगों की भलाई को ध्यान में रखते हुए इसे लिखा जाता है।

इस भविष्यवाणी के पूरा होने से पहले अजीब तरह की मुश्किलें और परेशानियाँ सामने आईं। अंत में खुदा करीम ने इन सभी मुश्किलों को दूर करके 10 सितंबर 1883 ई., सोमवार के दिन, इस भविष्यवाणी को पूरा किया।"

इसकी विस्तार से जानकारी देते हुए आप फ़रमाते हैं:

"6 सितंबर 1883 ई., गुरुवार के दिन, खुदा करीम ने बिल्कुल ज़रूरत के समय इस विनम्र सेवक को तसल्ली देने के लिए अपने मुबारक कलाम के ज़रिए यह खुशखबरी दी कि इक्कीस रुपये आने वाले हैं।

इस खुशखबरी में एक अजीब बात यह थी कि आने वाले रुपयों की निश्चित संख्या बताई गई थी। किसी खास संख्या की जानकारी देना उस खुदा का गुण है, जो छिपी हुई बातों को जानता है। यह किसी और का काम नहीं है।

इससे भी अधिक अजीब बात यह थी कि यह संख्या ऐसी थी, जिसका पहले कोई अंदाज़ा नहीं था, क्योंकि किताब की तय कीमत का इस संख्या से कोई संबंध नहीं था। इन्हीं अजीब बातों के कारण इस इल्हाम के पूरा होने से पहले ही कुछ आर्यों को इसके बारे में बता दिया गया। फिर 10 सितंबर 1883 ई. को तीन बार ज़ोर देकर इल्हाम हुआ कि इक्कीस रुपये आ गए हैं। इस इल्हाम से समझा गया कि आज यह भविष्यवाणी पूरी हो जाएगी।

इल्हाम के लगभग तीन मिनट से कुछ अधिक समय बाद एक बीमार व्यक्ति, जिसका नाम वज़ीर सिंह था, आया और उसने आते ही एक रुपया नज़राना दिया।

हालाँकि बीमारों का इलाज करना मेरा पेशा नहीं है और यदि संयोग से कोई बीमार आ जाए, तो यदि उसकी दवा मालूम हो, तो केवल सवाब की नीयत से खुदा के लिए उसे दवा दे दी जाती है।

लेकिन उससे वह रुपया ले लिया गया, क्योंकि तुरंत मेरे मन में विचार आया कि यह इस भविष्यवाणी का एक हिस्सा है।"

अर्थात् इक्कीस रुपये आने की जो भविष्यवाणी की गई थी, यह उसका एक हिस्सा था।

"इसके बाद डाकखाने में अपना एक भरोसेमंद व्यक्ति भेजा गया, इस विचार से कि शायद दूसरा हिस्सा डाकखाने के ज़रिए पूरा हो जाए।

डाकखाने के डाक मुंशी ने, जो एक हिंदू था, जवाब दिया कि मेरे पास केवल पाँच रुपये का एक मनीऑर्डर आया है, जिसके साथ एक कार्ड भी लगा हुआ है। यह डेरा ग़ाज़ी ख़ान से आया है। अभी रुपये मेरे पास नहीं हैं। जब आएँगे, तो दे दूँगा।

यह खबर सुनकर मुझे बहुत हैरानी हुई और ऐसी बेचैनी पैदा हुई, जिसे बयान नहीं किया जा सकता।"

क्योंकि आप गैर-मुसलमानों के सामने यह भविष्यवाणी बयान कर रहे थे, ताकि इस्लाम की सच्चाई साबित हो सके।

आप फ़रमाते हैं: "मैं इसी चिंता में सिर झुकाए बैठा था और सोच रहा था कि पाँच और एक मिलकर छह हुए। अब इक्कीस रुपये कैसे पूरे होंगे? ऐ खुदा! यह क्या हुआ?

मैं इसी गहरी सोच में था कि अचानक यह इल्हाम हुआ कि इक्कीस रुपये आ गए हैं, इसमें कोई शक नहीं।

इस इल्हाम के बाद दोपहर होने में अभी समय था कि उसी दिन एक आर्य, जो डाक मुंशी की पहली बात सुन चुका था, डाकखाने गया। डाक मुंशी ने किसी बात के सिलसिले में उसे बताया कि वास्तव में इक्कीस रुपये आए हैं और पहले मुँह से यूँ ही पाँच रुपये निकल गए थे।

चुनाँचे वही आर्य बीस रुपये और एक कार्ड लेकर आया, जो मुंशी इलाही बख़्श साहिब, अकाउंटेंट की ओर से था।

बाद में मालूम हुआ कि वह कार्ड मनीऑर्डर के कागज़ के साथ लगा हुआ भी नहीं था। यह भी मालूम हुआ कि रुपये पहले ही आ चुके थे।

मुंशी इलाही बख़्श साहिब की लिखी हुई रसीद से, जो डाकखाने के हवाले से थी, यह भी मालूम हुआ कि मनीऑर्डर 6 सितंबर 1883 ई. को, अर्थात् उसी दिन जब इल्हाम हुआ था, क़ादियान पहुँच गया था।

इस तरह डाक मुंशी की सारी बातें गलत साबित हुईं और उस खुदा का बयान सही साबित हुआ, जो छिपी हुई बातों को जानता है।

इस मुबारक दिन की याद में एक रुपये की मिठाई खरीदी गई और कुछ आर्यों को भी खिलाई गई।"

आपने खुशी के अवसर पर आर्यों को भी मिठाई खिलाई, क्योंकि आपने उन्हें पहले ही बताया था कि देखो, खुदा तआला ने मुझे इस तरह खबर दी थी।

فَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى آلَائِهٖ وَنَعْمَائِهٖ ظَاهِرِهَا وَبَاطِنِهَا۔

अर्थात् खुदा तआला की उसकी सभी बाहरी और भीतरी नेमतों पर सारी प्रशंसा और शुक्र उसी के लिए है।

(बराहीने अहमदिया, भाग चतुर्थ, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 1, पृष्ठ 623 से 626, हाशिये के हाशिये का नोट 3)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"कोई ऐसी कौम नहीं, जिसमें मेरे निशान प्रकट नहीं हुए और कोई ऐसा गिरोह नहीं, जो मेरे निशानों का गवाह नहीं है। यदि इन निशानों के गवाहों की संख्या दस करोड़ भी बताई जाए, तो इसमें कोई बढ़ा-चढ़ाकर कही गई बात नहीं होगी।

लेकिन विरोधियों की हालत पर रोना आता है कि उन्होंने इनसे कोई लाभ नहीं उठाया।

यदि ये निशान, जो उन्हें दिखाए गए, हज़रत ईसा इब्ने मरयम के समय में यहूदियों को दिखाए जाते, तो वे इस आयत के उदाहरण न बनते:

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ۔

अर्थात् उन पर अपमान और बेबसी डाल दी गई।

और यदि हज़रत लूत की कौम इन निशानों को देखती, तो वह एक बड़े भूकंप के कारण धरती में न धँसा दी जाती।

लेकिन अफ़सोस उन दिलों पर, जो पत्थर से भी अधिक कठोर साबित हुए और जिनके दिलों का अँधेरा हर अँधेरे से बढ़कर हो गया।

असल बात यह है कि जिस तरह समय के साथ दुनिया के हर साधन में तरक्की हुई है, उसी तरह कुफ़्र और बेईमानी में भी तरक्की हुई है। इसलिए यह बढ़ा हुआ कुफ़्र चाहता है कि उन पर कोई मामूली अज़ाब न आए, बल्कि ऐसा अज़ाब आए, जो दुनिया की शुरुआत से लेकर आज तक कभी न आया हो।

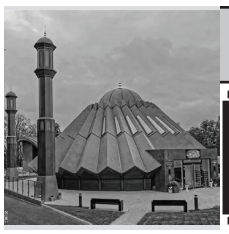
बहरहाल, हम खुदा का बार-बार शुक्र अदा करते हैं कि जिस रोशनी को विरोधियों ने स्वीकार नहीं किया और वे अंधे बने रहे, वही रोशनी हमारी देखने की शक्ति और पहचान में बढ़ोतरी का कारण बन गई।"

(हक़ीक़तुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 312)

यह बात आपने हक़ीक़तुल वह्यी में लिखी है।

खुदा तआला हमें जहाँ शुक्रगुज़ारी की सच्ची समझ प्रदान करे, वहीं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे गुलाम की बैअत में आकर हमें वास्तविक रोशनी, देखने की शक्ति और पहचान भी प्रदान करे।

★ ★ ★



ख़ुत्बः जुमअः

सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 04 सितम्बर 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेमिसाल उदारता और दानशीलता

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

जब अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इंसान-ए-कामिल बनाकर सारी इंसानियत के लिए आदर्श बनाया, तो फिर हर अच्छे गुण को आपकी ज़ात में पैदा करके उसे महान चरित्र बना दिया। मोमिनों को नसीहत फरमाई कि अगर तुम अपने अंदर अच्छे गुण पैदा करना चाहते हो और चरित्र के ऊँचे स्तर हासिल करना चाहते हो, तो इस महान रसूल का अनुसरण करो। यही तुम्हें खुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने का साधन बनाएगा। आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जहाँ अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार हर अच्छे गुण को ऊँचे स्तर तक पहुँचाया, वहीं मोमिनों को भी नसीहत फरमाई कि वे भी उसके ऊँचे स्तर हासिल करने की कोशिश करें।

जैसा कि आजकल आपकी सीरत के विभिन्न पहलुओं का ज़िक्र हो रहा है, इसी सिलसिले में आज मैं अल्लाह पर भरोसे के संबंध में आपकी सीरत के पहलुओं, आपके स्थान, मोमिनों को आपकी नसीहत और आपके अपने अमल का ज़िक्र करूँगा।

अल्लाह तआला ने अल्लाह पर भरोसे के बारे में पवित्र क़ुरआन में अलग-अलग संदर्भों में आदेश दिया है। विभिन्न अवसरों पर इसका ज़िक्र किया है। एक जगह आपको संबोधित करते हुए अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"ऐ नबी! हमने तुझे इस हाल में भेजा है कि तू (दुनिया का) निगरान भी है, (मोमिनों को) खुशखबरी देने वाला भी है और (इनकार करने वालों को) डराने वाला भी है। और अल्लाह के आदेश से उसकी ओर बुलाने वाला और एक चमकता हुआ सूरज बनाकर (भी भेजा है)। और मोमिनों को खुशखबरी दे दे कि उन्हें अल्लाह की ओर से बहुत बड़ा उपकार मिलेगा। और इनकार करने वालों तथा मुनाफिकों की बात हरगिज़ न मान और उनकी ओर से पहुँचाई जाने वाली तकलीफों को नज़रअंदाज़ कर दे और अल्लाह पर भरोसा रख। और काम बनाने के लिए अल्लाह ही काफी है।"

(सूरह अल-अहज़ाब, आयत 46 से 49)

इस प्रकार, जहाँ यह आपके लिए खुशखबरी है, वहीं मोमिनों के लिए भी खुशखबरी है कि यदि वे ईमान पर कायम रहेंगे, अल्लाह तआला के आदेशों पर अमल करेंगे और उसकी ज़ात पर पूरा भरोसा रखेंगे, तो अल्लाह तआला हर मुश्किल में उनके लिए भी काफी होगा।

फिर मोमिनों को ध्यान दिलाते हुए अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं और मोमिनों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए।"

(सूरह अत-तग़ाबुन, आयत 14)

इसलिए, यदि वे अल्लाह तआला की इबादत का हक अदा करेंगे और उस पर भरोसा रखेंगे, तो निशान भी देखेंगे। इसका सबसे ऊँचा नमूना हमें हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात में मिलता है। आपके कारण आपके सहाबा ने भी इससे लाभ उठाया और हमारे सामने उदाहरण पेश किए।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन की घटनाओं पर नज़र डालने से यह बात बहुत स्पष्ट और रोशन हो जाती है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहुत ऊँचे दर्जे के एकरंग, साफ दिल, खुदा के लिए जान देने वाले और लोगों के डर तथा उम्मीद से बिल्कुल मुँह मोड़ने वाले और केवल खुदा पर भरोसा करने वाले थे। तमाम नबियों की घटनाओं में खतरों के ऐसे अवसर और स्थान, और फिर खुदा पर ऐसा भरोसा करके खुले तौर पर शिर्क और मखलूक की पूजा से रोकने वाला, इतने दुश्मनों के बावजूद ऐसा साबित कदम और दृढ़ रहने वाला कोई एक भी दिखाई नहीं देता।"

(बराहीन-ए-अहमदिया, चार हिस्से, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 1, पृष्ठ 111-112)

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि नबियों का स्थान भी बहुत ऊँचा है, लेकिन वहाँ भी ऐसे उदाहरण नहीं मिलते जैसे अल्लाह पर भरोसे के उदाहरण हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात में मिलते हैं।

फिर आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: "तबत्तुल", अर्थात खुदा तआला से दिल लगाना और दुनिया से मुँह मोड़ना, इसका अमली नमूना हमारे पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं। आपको न किसी की प्रशंसा की परवाह थी और न बुराई की। यानी न किसी की तारीफ की परवाह थी और न किसी के बुरा कहने की। आपको कैसी-कैसी तकलीफें पहुँचीं, लेकिन आपने कोई परवाह नहीं की। कोई लालच और लोभ आपको उस काम से नहीं रोक सका जिसे करने के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खुदा की ओर से आए थे। जब तक इंसान अपने अंदर इस अवस्था को देख न ले और परीक्षा में सफल न हो जाए, तब तक उसे कभी निश्चिंत नहीं होना चाहिए।"

यहाँ आप अलैहिस्सलाम ने नसीहत फरमाई कि इस स्थान को हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। निश्चिंत नहीं होना चाहिए। अल्लाह तआला पर भरोसा करने के इस ऊँचे स्थान तक पहुँचना चाहिए कि केवल अल्लाह तआला की ज़ात ही सामने रहे।

फिर आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: "यह बात भी याद रखने योग्य है कि जो व्यक्ति तबत्तुल अपनाएगा, वही अल्लाह पर भरोसा करने वाला भी होगा। गोया अल्लाह पर भरोसा करने के लिए तबत्तुल अपनाना ज़रूरी है।"

अर्थात यदि अल्लाह पर भरोसा करना है, तो इसके लिए अल्लाह तआला की ओर झुकना भी ज़रूरी है।

"क्योंकि जब तक दूसरों के साथ ऐसे संबंध हैं कि उन पर भरोसा और सहारा किया जाता है, तब तक केवल अल्लाह पर सच्चा भरोसा कैसे हो सकता है? जब इंसान अल्लाह की ओर पूरी तरह झुकता है, तो वह दुनिया से अपना संबंध तोड़कर खुदा से संबंध जोड़ता है। और यह उस समय होता है जब अल्लाह पर पूरा भरोसा हो।

जिस तरह हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पूरी तरह तबत्तुल अपनाने वाले थे, उसी तरह वे अल्लाह पर पूरा भरोसा करने वाले भी थे। यही कारण है कि आपने इतने प्रतिष्ठित लोगों और क़ौमों तथा कबीलों के सरदारों की ज़रा भी परवाह नहीं की और उनकी मुखालफत से कुछ भी प्रभावित नहीं हुए। आपको खुदा तआला की ज़ात पर असाधारण विश्वास था। इसी कारण आपने इतने बड़े बोझ को उठा लिया, सारी दुनिया की मुखालफत का सामना किया और उनकी कोई हैसियत नहीं समझी। यह अल्लाह पर भरोसे का ऐसा महान नमूना है जिसकी मिसाल दुनिया में नहीं मिलती।

इसलिए कि इसमें खुदा को पसंद करके दुनिया को अपना विरोधी बना लिया जाता है। लेकिन यह अवस्था तब तक पैदा नहीं होती जब तक इंसान मानो खुदा को देख न ले और उसे यह उम्मीद न हो जाए कि इसके बाद दूसरा दरवाज़ा ज़रूर खुलेगा। जब यह उम्मीद और विश्वास पैदा हो जाता है, तो इंसान खुदा की राह में अपने प्रियजनों को भी अपना दुश्मन बना लेता है, क्योंकि वह जानता है कि खुदा उसे दूसरे दोस्त दे देगा। वह अपनी जायदाद खो देता है, क्योंकि उसे यकीन होता है कि इससे बेहतर उसे मिल जाएगा।

संक्षेप में, खुदा की प्रसन्नता को सबसे आगे रखना तबत्तुल है और तबत्तुल तथा तवक्कुल दोनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।" अर्थात दोनों एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं, जैसे जुड़वाँ हों।

"तबत्तुल का रहस्य तवक्कुल है और तवक्कुल की शर्त तबत्तुल है। इस मामले में हमारा यही धर्म है।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 2, पृष्ठ 302, संस्करण 2022)

जब इंसान पूरी तरह अल्लाह तआला की ओर झुकेगा और दुनिया पर निर्भर रहना छोड़ देगा, तभी उसके अंदर सच्चे भरोसे की अवस्था पैदा होगी। जैसा कि मैंने कहा और हम सब जानते हैं कि इसका सबसे ऊँचा उदाहरण हमारे आका और मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"यह मत समझो कि अल्लाह तआला कमज़ोर है। वह बड़ी ताकत वाली ज़ात है। जब तुम किसी मामले में उस पर भरोसा करोगे, तो वह ज़रूर तुम्हारी मदद करेगा। 'और जो अल्लाह पर भरोसा करता है, तो वह उसके लिए काफी है।'"

(सूरह अत-तलाक़, आयत 4)

लेकिन जिन लोगों को सबसे पहले इन आयतों के माध्यम से संबोधित किया गया था, वे धर्म के लोग थे। उनकी सारी चिंताएँ केवल धार्मिक मामलों के लिए थीं और उनके दुनियावी मामले खुदा के हवाले थे। इसलिए अल्लाह तआला ने उन्हें तसल्ली दी कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। संक्षेप में, तक़वा की बरकतों में से एक यह है कि अल्लाह तआला परहेज़गार इंसान को उन मुसीबतों से छुटकारा देता है जो धार्मिक मामलों में रुकावट बनती हैं।

इसी तरह अल्लाह तआला परहेज़गार को खास तौर पर रोज़ी देता है। यहाँ मैं ज्ञान और समझ की रोज़ी का ज़िक्र करूँगा।

आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: "हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के

उम्मी होने के बावजूद पूरे संसार का मुकाबला करना था, जिसमें अहले-किताब, दार्शनिक, ऊँचे दर्जे का इल्मी ज़ौक रखने वाले लोग और विद्वान शामिल थे। लेकिन आपको इतना आध्यात्मिक ज्ञान और रोज़ी मिली कि आप सब पर हावी हुए और उनकी गलतियाँ भी स्पष्ट कीं। यह आध्यात्मिक रोज़ी थी जिसकी कोई मिसाल नहीं।"

(मल्-फ़ूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 11, संस्करण 2022)

इस बारे में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "यदि तुम अल्लाह पर वैसा भरोसा करो जैसा उस पर भरोसा करने का हक़ है, तो तुम्हें ज़रूर रोज़ी दी जाएगी, जैसे पक्षियों को रोज़ी दी जाती है।"

यहाँ आपने दुनियावी रोज़ी के बारे में भी फ़रमाया कि अल्लाह पर भरोसा करोगे तो रोज़ी मिलेगी। पक्षी सुबह खाली पेट निकलते हैं और शाम को पेट भरकर लौटते हैं।

(सुनन तिर्मिज़ी, किताबुज़-जुहूद, बाब अल्लाह पर भरोसा करने के बारे में, हदीस नंबर 2344)

हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"दुनिया से बेरुखी का अर्थ यह नहीं कि हलाल चीज़ को हराम कर लिया जाए और न ही इसका अर्थ माल को बर्बाद करना है। ऐसा नहीं कि हमें माल से कोई लगाव ही नहीं और जो चीज़ें जायज़ हैं, उन्हें भी यह कहकर छोड़ दिया जाए कि भाई, हम तो इन्हें नहीं मानते, जैसा कि आजकल कुछ पीर-फकीरों का तरीका है।

बल्कि दुनिया से बेरुखी यह है कि तुम्हारे दोनों हाथों में जो कुछ है, उस पर तुम्हारा भरोसा उतना न हो जितना उस चीज़ पर है जो अल्लाह के पास है।"

यह बेरुखी है कि तुम्हारे पास जो अपना माल है, उससे अधिक तुम्हें इस बात पर विश्वास हो कि जो अल्लाह के पास है, उससे तुम्हें अधिक लाभ पहुँचेगा। और मुसीबत में मिलने वाले सवाब के बारे में तुम्हारी हालत ऐसी हो कि जब तुम पर कोई मुसीबत आए, तो तुम चाहो कि काश! वह तुम्हारे लिए बाकी रहती।

(सुनन तिर्मिज़ी, किताबुज़-जुहूद, बाब दुनिया से बेरुखी के बारे में, हदीस नंबर 2340)

इसलिए अल्लाह पर भरोसा यह है कि अपने पास मौजूद चीज़ों से अधिक इस बात पर यकीन हो कि अल्लाह तआला मेरी ज़रूरत पूरी करेगा। मेरी कुछ चीज़ें नष्ट हो सकती हैं, लेकिन अल्लाह तआला के पास जो कुछ है, वह कभी नष्ट नहीं होता। और ज़रूरत के अनुसार अल्लाह पर भरोसा करने वाले तथा नेक अमल करने वाले को मिलता रहता है।

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"आदम की औलाद के दिल में हर वादी की ओर जाने का एक रास्ता होता है। जिस व्यक्ति का दिल उसके सभी रास्तों के पीछे चल पड़े, तो अल्लाह को इसकी कोई परवाह नहीं कि वह उसे किसी वादी में ले जाकर छोड़ दे या उसे हलाक कर दे। और जो अल्लाह पर भरोसा करे, उसके लिए अल्लाह विभिन्न रास्तों पर चलने के मामले में काफी होगा।"

(सुनन इब्न माजा, किताबुज़-जुहूद, बाब अल्लाह पर भरोसा और यकीन, हदीस नंबर 4166)

इस हदीस की व्याख्या में लिखा है कि इसका मतलब यह है कि जो व्यक्ति अपने दिल को अलग-अलग इच्छाओं, चिंताओं और दुनियावी परेशानियों के अधीन कर देता है और उसका ध्यान हर तरफ बँटा रहता है, तो अल्लाह तआला को इसकी कोई परवाह नहीं रहती कि वह किस वादी में जाकर हलाक होता है, कहाँ जीता है और कहाँ मरता है। अल्लाह को उसकी परवाह नहीं रहती।

"और जो अल्लाह पर भरोसा करता है" का अर्थ यह है कि अल्लाह तआला उस व्यक्ति की अलग-अलग और बिखरी हुई ज़रूरतों, परेशानियों तथा आवश्यकताओं की ज़िम्मेदारी लेता है जो उसकी ओर झुकता है और उन्हें पूरा कर देता है।

इसी अर्थ की पुष्टि इस रिवायत से भी होती है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"जो व्यक्ति अपनी सभी चिंताओं को एक ही चिंता, अर्थात धर्म की चिंता बना ले, वह अपने धर्म को देखे कि वह क्या है, अल्लाह तआला से अपने संबंध को देखे कि वह कैसा है और अपनी आध्यात्मिक अवस्था को देखे कि वह कैसी है, तो अल्लाह तआला उसके लिए दुनिया और आखिरत की बाकी सभी चिंताओं को पूरा करने के लिए काफी हो जाता है।"

(मिरक़ातुल-मफ़ातीह, जिल्द 9, पृष्ठ 498, दारुल-कुतुबिल-इल्मिया, बैरूत, 2001)

इस हदीस का यही अर्थ है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कितनी बारीकी से अल्लाह तआला पर भरोसा रखते हुए अपने रोज़मर्रा के कामों के लिए दुआ किया करते थे।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बयान किया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब अपने घर से बाहर निकलते थे, तो कहते थे:

"अल्लाह के नाम से, मैंने अल्लाह पर भरोसा किया। ऐ अल्लाह! हम तेरी पनाह चाहते हैं कि हम फिसल जाएँ या भटक जाएँ, या हम ज़ुल्म करें या हम पर ज़ुल्म किया जाए, या हम अज्ञानता से काम लें या हमारे साथ अज्ञानता का व्यवहार किया जाए।"

(सुनन तिर्मिज़ी, किताबुद-दअवात, बाब में से एक दुआ: बिस्मिल्लाह, तवक्कल्तु अलल्लाह, हदीस नंबर 3427)

इसी तरह एक और रिवायत भी है। हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब अपने घर से बाहर तशरीफ लाते, तो कहते:

"अल्लाह के नाम से, मैंने अल्लाह पर भरोसा किया। अल्लाह की मदद के बिना न कोई ताकत है और न कोई शक्ति। ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ कि मैं गुमराह हो जाऊँ या मुझे गुमराह किया जाए, मैं फिसल जाऊँ या मुझे फिसलाया जाए, मैं ज़ुल्म करूँ या मुझ पर ज़ुल्म किया जाए, मैं अज्ञानता का काम करूँ या मेरे साथ अज्ञानता का व्यवहार किया जाए, या मैं किसी पर ज़्यादती करूँ या मेरे खिलाफ ज़्यादती की जाए।"

(कंज़ुल-उम्माल, जिल्द 7, पृष्ठ 54, रिवायत 18416, दारुल-कुतुबिल-इल्मिया, बैरूत)

अर्थात इसमें सभी बातों को शामिल कर लिया गया है। इन सभी का इसमें पूरा वर्णन हो गया है। इसी तरह घर में दाखिल होने की दुआ का भी ज़िक्र मिलता है। हज़रत अबू मालिक अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"जब कोई व्यक्ति अपने घर में दाखिल हो, तो उसे कहना चाहिए: ऐ अल्लाह! मैं तुझसे घर में दाखिल होने की भलाई और घर से बाहर निकलने की भलाई माँगता हूँ। अल्लाह के नाम से हम दाखिल हुए और अल्लाह के नाम से हम बाहर निकले तथा अपने रब अल्लाह पर हमने भरोसा किया।"

फिर वह अपने घरवालों को सलाम करे।

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल-अदब, बाब: जब कोई व्यक्ति अपने घर में दाखिल हो तो क्या कहे, हदीस नंबर 5096)

यह दुआ पढ़े और फिर घर में दाखिल होकर घरवालों को सलाम करे।

फिर आपके अल्लाह पर भरोसे और खुदा तआला के भय के बारे में एक रिवायत है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु के पास तशरीफ ले गए। आपने उनके पास खजूरों का एक ढेर देखा, तो फ़रमाया:

"ऐ बिलाल! यह क्या है?" हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया:

"ये कुछ खजूरें हैं जिन्हें मैंने आपके लिए जमा करके रखा है।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "ऐ बिलाल! तुम्हारे लिए अफसोस है! क्या तुम्हें यह डर नहीं कि कयामत के दिन इनकी वजह से जहन्नम में धुआँ उठेगा, अर्थात ये अज़ाब का कारण बन जाएँगी? ऐ बिलाल! खर्च करो और अर्श के मालिक की ओर से तंगहाली का डर न करो।"

(अल-मुअजमुल-अवसत, भाग 3, पृष्ठ 86, हदीस नंबर 2572, प्रकाशक: दारुल-हरमैन, काहिरा)

अल्लाह पर भरोसा रखो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस संबंध में फरमाते हैं:

"इंसान के ईमान में तरक्की तभी हो सकती है जब वह खुदा तआला के आदेशों पर चले और खुदा पर अपने भरोसे को कायम रखे। एक बार हज़रत रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि वे खजूरें जमा कर रहे थे। आपने फ़रमाया कि ऐसा क्यों करते हो? उन्होंने कहा कि कल के लिए जमा करता हूँ। आपने फ़रमाया कि क्या तू कल के खुदा पर ईमान नहीं रखता?"

अर्थात जो खुदा आज तुझे दे रहा है, क्या वह कल तुझे नहीं देगा? क्या तुझे उस पर ईमान नहीं है?

लेकिन आप अलैहिस्सलाम ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि इसका अर्थ यह नहीं कि इंसान फिजूलखर्ची करता चला जाए। कुछ लोगों के हाथ खुले होते हैं और वे खर्च करने में कोई सीमा नहीं रखते। आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"लेकिन यह बात हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु से कही गई थी, हर किसी से नहीं। और हर व्यक्ति को उसकी सहनशक्ति के अनुसार ही उपदेश और नसीहत की जाती है।"

(मल्-फूज़ात, जिल्द 9, पृष्ठ 210, संस्करण 2022)

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में यह नसीहत ज़रूर है। क्योंकि हदीस में स्पष्ट रूप से आता है कि जब आपने कहा कि मैं आपके लिए खजूरें जमा कर रहा हूँ, तो आपने फ़रमाया कि मेरा तो अल्लाह पर भरोसा है। यदि ये खजूरें मेरे लिए रखी गई हैं, तो क्या इनका धुआँ मुझ तक पहुँचेगा? लेकिन कुछ लोगों को और पवित्र क़ुरआन के आदेश के अनुसार यह नसीहत भी दी गई है कि इतनी फिजूलखर्ची न करो कि कुछ भी बाकी न रहे। अपने साधनों का कुछ इंतज़ाम भी करो और फिर अल्लाह तआला पर भरोसा भी रखो कि वह इन साधनों को सुरक्षित रखे और उनसे लाभ उठाने की भी तौफीक़ दे।

अल्लाह पर भरोसा करने का अर्थ यह नहीं कि सावधानी से काम न लिया जाए और साधनों का इस्तेमाल न किया जाए। यह बात भी इस्लामी शिक्षा के खिलाफ है।

इसीलिए हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक व्यक्ति ने अर्ज़ किया:

"या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! क्या मैं ऊँट का घुटना बाँधकर अल्लाह पर भरोसा करूँ या उसे खुला छोड़कर भरोसा करूँ?" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "उसका घुटना बाँधो और अल्लाह पर भरोसा करो।"

(सुनन तिर्मिज़ी, किताब: कयामत, दिल को नरम करने वाली बातों और परहेज़गारी के अध्याय, बाब: ऊँट को बाँधो और भरोसा करो, हदीस नंबर 2517)

यह एक उदाहरण है। बाकी मामलों में भी इसी उदाहरण को लागू किया जा सकता है। रिवायत में है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह बात उस समय फरमाई थी जब एक बद्दू या एक रिवायत के अनुसार हज़रत अम्र बिन उमय्या रज़ियल्लाहु

अन्हु ने अपनी ऊँटनी को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मस्जिद के दरवाज़े पर खुला छोड़ दिया और नमाज़ पढ़ने के लिए अंदर चले गए।

(तख़रीज अहादीस व आसार किताब फी ज़िलालिल-क़ुरआन, पृष्ठ 342, हदीस 660, दारुल-हिजरा लिन्नशर वत्तौज़ी, 1995; अल-जामे लिशुअबिल-ईमान, जिल्द 2, पृष्ठ 427, हदीस नंबर 1159, मक्तबा अर-रुश्द)

इसकी व्याख्या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस तरह फरमाई है:

"इंसान को चाहिए कि तक़वा को हाथ से न जाने दे और खुदा पर भरोसा रखे, तो फिर उसे किसी प्रकार की तकलीफ नहीं हो सकती। खुदा पर भरोसा करने का यह अर्थ नहीं कि इंसान उपाय करना छोड़ दे, बल्कि इसका अर्थ यह है कि पूरा उपाय करके फिर परिणाम खुदा पर छोड़ दे। इसी का नाम तवक्कुल है।

यदि वह कोई उपाय नहीं करता और केवल भरोसा करता है, तो उसका भरोसा खोखला होगा। और यदि वह केवल उपाय करके उसी पर भरोसा करता है, तो यह सोचता है कि मैंने उपाय कर लिया है, अब यही काफी है और खुदा पर भरोसा करने की ज़रूरत नहीं, तो उसका उपाय भी खोखला होगा।

एक व्यक्ति ऊँट पर सवार था। उसने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा, तो आदर के लिए नीचे उतर आया और उसने इरादा किया कि अल्लाह पर भरोसा करेगा और कोई उपाय नहीं करेगा। इसलिए उसने अपने ऊँट का घुटना नहीं बाँधा। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिलकर वापस आया, तो देखा कि ऊँट वहाँ नहीं था। वह वापस आया और शिकायत की कि मैंने तो भरोसा किया था, लेकिन मेरा ऊँट चला गया। आपने फ़रमाया कि तूने गलती की। पहले ऊँट का घुटना बाँधता और फिर भरोसा करता, तो ठीक होता।"

(मल्-फूज़ात, जिल्द 6, पृष्ठ 58-59, संस्करण 2022)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास कुछ दीनार आए। आपने उनमें से सब बाँट दिए। केवल छह दीनार बाकी रह गए, जिन्हें आपने अपनी पाक पत्नियों में से एक के पास रखवा दिया।

एक और रिवायत में है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी आखिरी बीमारी में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के सीने से टेक लगाए हुए थे, तो आपने फ़रमाया:

"ऐ आयशा! वे सोने के दीनार कहाँ हैं?" हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया कि वे मेरे पास सुरक्षित हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "उन्हें अल्लाह की राह में खर्च कर दो।"

इसके बाद बीमारी की गंभीरता के कारण आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर बेहोशी छा गई। वे दीनार भी आपने इसलिए रखवाए थे कि किसी समय उन्हें बाँटना है। उस समय आप हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के सीने से टेक लगाए हुए थे। जब आपको होश आया, तो आपने फिर पूछा:

"ऐ आयशा! क्या वे सोने के दीनार खर्च कर दिए गए?" उन्होंने अर्ज़ किया:

"नहीं, अल्लाह की कसम, या रसूलुल्लाह! अभी खर्च नहीं किए।"

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि आपने वे दीनार मँगवाए। जब वे लाए गए, तो आपने उन्हें अपनी हथेली पर रखा और गिना। वे छह दीनार थे। फिर आपने फ़रमाया:

"मुहम्मद का अपने रब पर कैसा भरोसा होगा यदि खुदा से मुलाकात और दुनिया से विदा होते समय ये दीनार उसके पास बाकी हों।"

इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वे सभी दीनार अल्लाह की राह में सदका कर दिए और उसी दिन आपकी वफात हो गई।

(तबक़ातुल-कुबरा, जिल्द 2, पृष्ठ 182-183, दारुल-कुतुबिल-इल्मिया से उद्धृत)

अल्लाह तआला पवित्र क़ुरआन में फ़रमाता है: "तू कह दे कि हमें वही पहुँचता है जो अल्लाह ने हमारे लिए निर्धारित कर दिया है। वही हमारा मददगार है और मोमिनों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए।"

(सूरह अत-तौबा, आयत 51)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श जीवन में हम देखते हैं कि आपने एक अवसर पर अल्लाह पर भरोसे का कितना ऊँचा उदाहरण पेश किया। अल्लाह तआला ने भरोसा करने का आदेश दिया, तो आपने खुद भी इस पर किस तरह अमल किया।

जब मुसैलमा कज़्ज़ाब ने अपनी सेना के साथ आपकी आज्ञाकारिता स्वीकार करने की बात कही, लेकिन इसके लिए एक शर्त रखी, तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसकी शर्त स्वीकार करने से सख्ती से इनकार कर दिया।

हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि उन्होंने कहा:

मुसैलमा कज़्ज़ाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में आया और कहने लगा कि यदि मुहम्मद अपने बाद मुझे अपना उत्तराधिकारी बना दें, तो मैं उनका अनुसरण करूँगा। वह मदीना में अपनी सेना के बहुत से लोगों के साथ आया था। कुछ रिवायतों में आता है कि उसके साथ एक लाख लोग थे। अर्थात उसके मानने वाले इतने थे, हालाँकि संभव है कि आने वाले लोग कम ही रहे हों।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके पास तशरीफ ले गए। आपके साथ हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शम्मास रज़ियल्लाहु अन्हु थे और आपके हाथ में खजूर की एक छड़ी थी। आप मुसैलमा के सामने जाकर खड़े हो गए। वह अपने साथियों के साथ बैठा हुआ था।

आपने फ़रमाया: "यदि तू मुझसे यह लकड़ी का टुकड़ा भी माँगे, तो मैं तुझे यह भी नहीं दूँगा। तू अल्लाह के उस फैसले से हरगिज़ आगे नहीं बढ़ सकेगा जो तेरे लिए निर्धारित है। यदि तू पीठ फेरकर चला गया, तो अल्लाह तआला तेरी जड़ काट देगा। और मैं तुझे वही व्यक्ति देख रहा हूँ जिसके बारे में मुझे सपने में बहुत कुछ दिखाया गया है।"

इससे पहले वह कह चुका था कि आप उसे अपना उत्तराधिकारी बना दें। आपने स्पष्ट कर दिया कि उसे इस छड़ी के बराबर भी कुछ नहीं मिलेगा। फिर आपने फ़रमाया कि मुझे सपने में जो दिखाया गया था, मैं तुझे उसी व्यक्ति के रूप में देख रहा हूँ। और ये साबित हैं। यहाँ साबित शब्द का अर्थ किसी गुण के रूप में नहीं, बल्कि हज़रत साबित रज़ियल्लाहु अन्हु के नाम के रूप में है। वे सहाबी आपके साथ थे। आपने फ़रमाया कि ये साबित हैं, अर्थात ये मेरे प्रतिनिधि हैं और मेरी ओर से तुम्हें जवाब देंगे। यह कहकर आप उसे छोड़कर वापस चले गए।

हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते थे कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस कथन के बारे में पूछा कि आपने फ़रमाया था कि मैं तुझे वही व्यक्ति देख रहा हूँ जिसके बारे में मुझे सपने में कुछ दिखाया गया था।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे बताया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"एक बार मैं सो रहा था। उसी दौरान मैंने अपने हाथों में सोने के दो कंगन देखे। उन्हें देखकर मैं चिंतित हुआ। फिर मुझे सपने में वह्यी हुई कि मैं उन पर फूँक मारूँ। मैंने उन पर फूँक मारी, तो वे उड़ गए। मैंने उनकी व्याख्या यह समझी कि वे दो झूठे व्यक्ति हैं जो बाद में सामने आएँगे। उनमें से एक असवद अंसी है और दूसरा मुसैलमा।"

(सहीह बुखारी, किताबुल-मग़ाज़ी, बाब: बनी हनीफ़ा का प्रतिनिधिमंडल, हदीस 4373-4374, अनुवाद, जिल्द 9, पृष्ठ 257-258, नज़ारत इशाअत द्वारा प्रकाशित; अल-बिदाया वन-निहाया, भाग 9, पृष्ठ 333, हिज्र, 1998)

असवद अंसी और मुसैलमा दोनों ने बगावत का रवैया अपनाया था। वे उस समय वहाँ से चले गए और हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में उन्होंने युद्ध भी किया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस संबंध में विस्तार से लिखते हैं:

"रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को किसी भी काम में दुनिया और दुनिया के लोगों की ओर ध्यान नहीं था। आप दुनियावी साधनों की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखते थे, बल्कि हर काम में आपकी नज़र खुदा तआला की ओर लगी रहती थी कि वही सब कुछ करेगा। गोया आप अल्लाह पर भरोसा करने का एक पूर्ण नमूना थे, जिसकी मिसाल न पहले नबियों में मिलती है और न आपके बाद ऐसा कोई इंसान पैदा हुआ जो आपके जैसा भरोसा करने वाला हो।

इतिहास हमें बताता है कि मुसैलमा रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में एक बहुत बड़ी सेना लेकर मदीना में आपके पास आया और उसने आपसे निवेदन किया कि यदि आप उसे अपने बाद ख़लीफ़ा बना लें, तो वह अपनी जमाअत समेत आपका अनुसरण करने लगेगा। उस समय इस्लाम की हालत ऐसी थी कि आप इस साधन को अपना सकते थे और उसकी मदद से लाभ उठा सकते थे। लेकिन जिस पाक हस्ती को खुदा तआला की ताकत पर भरोसा था और जो इंसानी योजनाओं की ज़रा भी परवाह नहीं करती थी, उसने उसकी माँग को तुरंत अस्वीकार कर दिया।

हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में मुसैलमा कज़्ज़ाब आया और कहने लगा कि यदि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने बाद मुझे शासक बना दें, तो मैं उनका अनुसरण करूँगा। उस समय वह अपनी क़ौम के बहुत से लोगों को अपने साथ लाया था।

रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह बात सुनी, तो उसकी ओर तशरीफ ले गए। हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शम्मास रज़ियल्लाहु अन्हु आपके साथ थे। आपके हाथ में खजूर की एक शाख का टुकड़ा था। आप उसके सामने जाकर खड़े हो गए। वह अपने साथियों के बीच बैठा था। आपने फ़रमाया कि यदि तू मुझसे यह शाख भी माँगे, तो मैं तुझे नहीं दूँगा। खुदा ने तेरे लिए जो निर्धारित किया है, तू उससे आगे नहीं बढ़ सकेगा। यदि तू पीठ फेरकर चला गया, तो अल्लाह तआला तेरी जड़ें काट देगा। मैं तुझे उसी व्यक्ति के रूप में देख रहा हूँ जिसके बारे में मुझे वह दृश्य दिखाया गया था जो मैंने देखा था। और ये साबित हैं, जो मेरी ओर से तुझे जवाब देंगे। फिर आप वहाँ से चले गए।

हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने पूछा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह क्या फ़रमाया था कि मैं तुझे उसी व्यक्ति के रूप में देख रहा हूँ जिसके बारे में मुझे वह दृश्य दिखाया गया था जो मैंने देखा था? इस पर हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे बताया कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि एक बार मैं सो रहा था और मैंने देखा कि मेरे दोनों हाथों में सोने के दो कड़े हैं। उनका होना मुझे अच्छा नहीं लगा। इस पर मुझे सपने में वह्यी हुई कि मैं उन पर फूँक मारूँ। जब मैंने फूँक मारी, तो वे दोनों उड़ गए। मैंने उनकी व्याख्या यह समझी कि दो झूठे व्यक्ति होंगे जो मेरे बाद सामने आएँगे। उनमें से एक असवद अंसी है और दूसरा मुसैलमा।

इस घटना से पता चलता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को खुदा तआला पर कितना विश्वास था और आप उसकी मदद के बारे में कितने आश्वस्त थे।

आपके चारों ओर इनकार करने वालों का ज़ोर था। वे हर समय आपको दुख और तकलीफ पहुँचाने में लगे रहते थे और जिन तरीकों से संभव होता, आपको परेशान करते थे।

क़ैसर और किसरा भी अपने-अपने अधिकारियों को आपके मुकाबले के लिए लगातार आदेश भेज रहे थे। बनी ग़स्सान लड़ने की तैयारियाँ कर रहे थे। ईरानी इस बढ़ती हुई ताकत को हैरानी और ईर्ष्या की नज़र से देख रहे थे। हर सरकार इस नई तहरीक को शक की नज़र से देख रही थी।

ऐसे समय में जब तक आपके आसपास एक बड़ी सेना जमा न हो जाती, दुश्मनों से बचना देखने में मुश्किल बल्कि असंभव लगता था। मदीना मुनव्वरा से लेकर मक्का मुकर्रमा तक की विजयों ने आपको आसपास की हर सरकार के मुकाबले में खड़ा कर दिया था। दूर की सोच रखने वाले लोग शुरुआत से ही इस बढ़ती हुई ताकत को खत्म करने की चिंता में थे, क्योंकि उन्हें यकीन था कि यदि यह ताकत और बढ़ गई, तो हमारे बड़े-बड़े महलों को मिट्टी में मिला देगी।

ऐसे हालात में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो भी तैयारी करते, वह कम थी। इंसानी अक्ल ऐसी अवस्था में जिस तरह दोस्तों और दुश्मनों को अपने साथ मिलाना चाहती है और जिन उपायों से दूसरों को भी अपने साथ शामिल करना चाहती है, उन्हें इतिहास पढ़ने वाले आसानी से समझ सकते हैं।

लेकिन मेरे उस प्यारे का सहारा ज़मीनी नहीं, बल्कि आसमानी था। बढ़ती हुई सेनाएँ, दौड़ते हुए घोड़े, उठते हुए भाले और चमकती हुई तलवारें उसकी नज़र में कोई खास हैसियत नहीं रखती थीं। वह आसमानी फरिश्तों के उतरने का दृश्य देख रहा था और ज़मीन तथा आसमान को पैदा करने वाला हर समय उसके कानों में तसल्ली देने वाली बातें डाल रहा था। उसका दिल यकीन से भरा हुआ और सीना ईमान से लबरेज़ था। संक्षेप में, दुनियावी साधनों पर भरोसा करने के बजाय उसका भरोसा खुदा पर था। फिर वह इन मुसीबतों से क्यों घबराता?

उसने मुसैलमा और उसकी सेना पर भरोसा करना एक पल के लिए भी उचित नहीं समझा। उसने साफ कह दिया कि खिलाफत का लालच देकर तुझे अपने साथ मिलाना और तेरी क़ौम की मदद हासिल करना तो अलग बात है, यदि मुझे खजूर की एक शाख के बदले भी तेरी सहायता लेनी पड़े, तो मैं उसकी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखूँगा।

इस दृढ़ हृदय की अवस्था पर विचार करो। अल्लाह पर भरोसा करने वाले इस इंसान की शान को देखो। उसके यकीन से भरे दिल की हालत को अपने दिलों में महसूस करने की कोशिश करो कि किस विश्वास और भरोसे के आधार पर वह मुसैलमा को जवाब देता है। क्या कोई बादशाह ऐसे समय में इतनी हिम्मत और दिलेरी दिखा सकता है? क्या इतिहास किसी हाड़-मांस से बने इंसान को ऐसे हालात से इतनी सलामती के साथ निकलते हुए दिखा सकता है? यदि नहीं, तो इसकी वजह क्या है? इसकी वजह केवल यही है कि आपकी ज़िंदगी का किसी दूसरे इंसान से मुकाबला करना ही गलत है, क्योंकि आप नबी थे। यदि आपका मुकाबला किया जा सकता है, तो नबियों से किया जा सकता है, लेकिन जो शान आपको हासिल है, उसकी मिसाल नबियों में भी नहीं मिलती, क्योंकि आपको सभी नबियों पर श्रेष्ठता प्राप्त है।

यहाँ यह बात भी याद रखनी चाहिए कि मुसैलमा को जवाब देते समय रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने यह बात नहीं थी कि आप शासन का अधिकार अपनी औलाद के लिए सुरक्षित रखना चाहते थे। यदि ऐसा होता, तो आपके इनकार को अल्लाह पर भरोसे का परिणाम नहीं, बल्कि अपनी औलाद से प्रेम का परिणाम कहा जाता। लेकिन रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी औलाद में से किसी को अपने बाद उत्तराधिकारी नहीं बनाया, बल्कि हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की खिलाफत की ओर संकेत फ़रमाया। इससे पता चलता है कि आपका इनकार किसी दुनियावी उद्देश्य के लिए नहीं था, बल्कि यह आपके असीम विश्वास का परिणाम था।

इसी तरह यह बात भी याद रखनी चाहिए कि मुसैलमा कज़्ज़ाब की सहायता लेना देखने में धार्मिक दृष्टि से भी नुकसानदायक नहीं था। क्योंकि यदि वह यह शर्त रखता कि मैं आपका अनुसरण इस शर्त पर करता हूँ कि आप धार्मिक मामलों में मेरी कुछ बातें मान लें, तो भी यह कहा जा सकता था कि आपने अपनी बात पर अड़े रहने के कारण उसकी माँग अस्वीकार कर दी। लेकिन उसने ऐसी कोई बात नहीं कही जिससे पता चलता कि वह धर्म में कोई बदलाव चाहता था। इसलिए आपका इनकार केवल उस भरोसे और यकीन का परिणाम था जो आपको खुदा तआला पर था।

एक और बात भी याद रखने योग्य है कि यदि आप चाहते, तो उस समय मुसैलमा को पकड़वाकर मरवा सकते थे। हालाँकि वह एक बड़ी जमाअत के साथ आया था, लेकिन वह मदीना में था और आपके अधिकार में था। फिर भी इस मामले में आपने अल्लाह तआला पर भरोसा किया कि वही इस नुकसान पहुँचाने वाले व्यक्ति को हलाक करेगा।

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिं व अला आले मुहम्मदिं व बारिक व सल्लिम, इन्नका हमीदुम मजीद।

(सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, अनवारुल-उलूम, जिल्द 1, पृष्ठ 500 से 504)

अब मैं नमाज़ के बाद कुछ ग़ायबाना जनाज़े पढ़ाऊँगा।

जिन मरहूमों का ज़िक्र है, उनमें पहला ज़िक्र आदरणीय मिर्ज़ा सफदर महमूद साहब पुत्र आदरणीय गुलाम रसूल साहब का है। वे मंडी बहाउद्दीन के रहने वाले थे। पिछले दिनों 2 सितंबर को मंडी बहाउद्दीन में उन्हें शहीद कर दिया गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

किसी अज्ञात व्यक्ति ने उनका पीछा किया और पीछे से गोली मारकर उन्हें शहीद कर दिया। शहादत के समय मरहूम की उम्र पैंसठ (65) वर्ष थी।

विवरण के अनुसार, जिस दिन यह घटना हुई, मिर्ज़ा सफदर महमूद साहब अपनी वर्कशॉप से मग़रिब की नमाज़ अदा करने के लिए मोटरसाइकिल पर रवाना हुए। रास्ते में एक सुनसान जगह आती थी। वहाँ से गुजरते समय किसी अज्ञात व्यक्ति ने मोटरसाइकिल का पीछा करके पीछे से गोली चलाई। मरहूम को तीन गोलियाँ लगीं, जिसके परिणामस्वरूप घटनास्थल पर ही उनकी मृत्यु हो गई। घटना के बाद हमलावर फरार हो गया।

शहीद मरहूम के परिवार में अहमदियत का प्रवेश उनकी नानी आदरणीय हुसैन बीबी साहिबा, निवासी खारियाँ, जिला गुजरात, के माध्यम से हुआ था। आमतौर पर परिवारों में पुरुषों के माध्यम से अहमदियत आती है, लेकिन यहाँ एक महिला के माध्यम से उनके परिवार में अहमदियत आई। उन्होंने खिलाफत-ए-सानिया के शुरुआती दौर में बैअत करने का सौभाग्य प्राप्त किया था। बाद में उनकी नानी आदरणीय हुसैन बीबी साहिबा की कोशिश और तबलीग़ से शहीद मरहूम के दादा आदरणीय नवाब दीन साहब, जो उनके रिश्तेदार थे, ने भी बैअत कर ली।

शहीद अपने क्षेत्र के प्रमुख अहमदी थे और अपने पेशे तथा हुनर के कारण विशेष प्रसिद्धि रखते थे। वे मैकेनिक थे और उनकी अपनी वर्कशॉप थी। उनका कारोबार अच्छा था। सच बोलना, सिद्धांतों का पालन करना और झूठ से नफरत करना उनके प्रमुख गुण थे। हर आने वाले से बहुत खुशी और प्रेम से मिलते थे। बड़े प्यार से सलाम करते थे। उनकी दुकान से कोई माँगने वाला कभी खाली हाथ नहीं लौटता था।

शहीद मरहूम की पत्नी नाविदा साहिबा बयान करती हैं कि उन्हें खिलाफत से बेहद प्रेम था। पाँचों वक्त की नमाज़ के अलावा तहज्जुद भी पढ़ते थे और नियमित रूप से एमटीए के कार्यक्रमों से लाभ उठाते थे। हर महीने की पहली तारीख को अपनी आमदनी का हिसाब पूरा करके सचिव माल से संपर्क करते और नियमित रूप से चंदा अदा करते थे। वे सचिव माल के घर जाकर चंदा देते थे। रोज़ाना नियमित रूप से सदका देते थे। हर महीने सदका के रूप में बकरा भी देते थे। मस्जिद और दूसरी आर्थिक तहरीकों में सबसे पहले अपना हिस्सा डालते थे।

वे निज़ाम-ए-वसीयत में खुद भी शामिल थे और घर के सभी लोगों को भी इसमें शामिल करवाया था। वे अपने कर्मचारियों का भी बहुत ध्यान रखते थे। यदि उन्हें कोई ज़रूरत होती, आर्थिक परेशानी होती या कोई बीमार होता, तो वे उसकी ज़रूरत पूरी करते थे। उनके बच्चों का ध्यान रखते और उनके खर्च पूरे करने की कोशिश करते थे।

उनकी वर्कशॉप थी। आमतौर पर लोग कमाई पर ध्यान देते हैं, लेकिन यदि किसी मुसाफिर की गाड़ी खराब हो जाती, तो वे बहुत कम पैसे लेकर उसकी मरम्मत करते और कभी-कभी कुछ लोगों की गाड़ी मुफ्त में भी ठीक कर देते थे। वे कितने भी व्यस्त क्यों न हों, जमाअत के कार्यक्रमों को प्राथमिकता देते थे।

मंडी बहाउद्दीन के अमीर साहब बताते हैं कि शहादत के समय शहीद मरहूम जमाअत के नायब सदर, सचिव जायदाद, नायब ज़ईम अंसारुल्लाह और मुंतज़िम माल अंसारुल्लाह, मंडी बहाउद्दीन शहर के रूप में सेवाएँ दे रहे थे। उनके पास कई जिम्मेदारियाँ थीं। मस्जिद का प्रबंध भी उनके सुपुर्द था और उसकी चाबी भी उनके पास रहती थी। वे हर नमाज़ के समय जाकर मस्जिद खोला करते थे। आमतौर पर कारोबारी लोग इस ओर ध्यान नहीं देते, लेकिन वे हर नमाज़ के समय मस्जिद खोलने जाते थे।

मुफ़ज़्ज़ल महमूद साहब, मुर्बी सिलसिला हैं। वे बताते हैं कि शहीद मरहूम ने उन्हें कहा था कि पिछले 25 वर्षों से वे हर दिन वर्कशॉप आने से पहले दो नफ़्ल नमाज़ पढ़ते हैं।

शहीद मरहूम के पीछे उनकी पत्नी आदरणीय नाविदा सफदर साहिबा के अलावा दो बेटे कामरान सफदर और लुकमान सफदर हैं। दोनों शादीशुदा हैं।

अल्लाह तआला शहीद मरहूम के दर्जे बुलंद करे और उन्हें जन्नतुल-फिरदौस में ऊँचा स्थान प्रदान करे। सभी पीछे रह जाने वालों को सुंदर धैर्य प्रदान करे और उनका सहायक तथा रक्षक बने।

दूसरा ज़िक्र अज़ीज़ा उम्मतुल-अज़ीज़ का है। पिछले दिनों 62 वर्ष की उम्र में उनका निधन हो गया। कुछ समय से वे काफी बीमार थीं। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

अल्लाह तआला के फज़ल से वे मूसीया थीं। वे हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत सय्यदा उम्मे ताहिर साहिबा की नातिन थीं। वे साहिबज़ादी उम्मतुल-हकीम साहिबा और आदरणीय सय्यद दाऊद मुज़फ्फर शाह साहब की बेटी थीं। सय्यद दाऊद मुज़फ्फर शाह साहब, उम्मे ताहिर के भतीजे और सय्यद महमूदुल्लाह शाह साहब के बेटे थे। वे मेरी खाला की बेटी भी थीं और मेरी पत्नी की सबसे छोटी बहन भी थीं।

उनका निकाह हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह राबे रहमतुल्लाह अलैहि ने ख़ालिद ज़ुफर साहब से पढ़ाया था। उनकी पहली पत्नी का निधन हो गया था और अज़ीज़ा उम्मतुल-अज़ीज़ से उनकी दूसरी शादी थी। अल्लाह तआला ने अज़ीज़ा को दो बेटों से नवाज़ा और दोनों बेटे योग्य हैं। एक बेटा वकालत करके वक्फ-ए-ज़िंदगी में शामिल है और रबवा में नज़ारत उमूर-ए-आम्मा में काम कर रहा है। वह अच्छा और योग्य वकील है। दूसरे बेटे का नाम हाशिर ज़ुफर है। पहले बेटे का नाम महमूद इफ़्तिखार और दूसरे का हाशिर अहमद है। हाशिर ने जर्मनी में पढ़ाई की है और उच्च शिक्षा प्राप्त की है।

दोनों बेटों ने अपनी माँ की अपनी क्षमता के अनुसार बहुत सेवा की। अल्लाह तआला उन्हें भी इसका बदला दे, आगे भी माँ की दुआओं का वारिस बनाए और नेकियों पर कायम रखे।

अज़ीज़ा की ज़िंदगी बहुत तकलीफ में गुज़री, लेकिन उन्होंने बड़े धैर्य से जीवन बिताया।

मैंने उनके जैसी सब्र करने वाली बहुत कम देखी हैं। अज़ीज़ा के भाई सय्यद ख़ालिद अहमद शाह साहब कहते हैं कि हमारी इस बहन ने अपने माता-पिता की बहुत सेवा की। माँ के निधन के बाद उन्होंने अपने पिता की बहुत सेवा की। वे हमदर्दी और गरीबों का ध्यान रखने में अपनी माँ के नक्शेकदम पर चलती थीं। खिलाफत से उनका प्रेम और श्रद्धा बेमिसाल थी। उन्होंने बच्चों की परवरिश भी बहुत अच्छे ढंग से की।

उनकी एक खूबी यह थी कि वे किसी के खिलाफ कोई बात नहीं करती थीं और न ही ऐसी बातें सुनती थीं। वे अपने दिल को साफ रखती थीं। किसी को तकलीफ में नहीं देख सकती थीं। अपनी तकलीफ सहने की हिम्मत और सब्र बहुत था। जैसा कि मैंने कहा, उन्होंने बहुत धैर्य दिखाया। झगड़ों से बचने के लिए उन्होंने खुद को दुनिया के झंझटों से अलग कर लिया था। लोगों ने उनके बारे में गलत बातें भी कीं और गलत टिप्पणियाँ भी कीं, लेकिन उन्होंने किसी से झगड़ा नहीं किया। हर जगह थोड़ी-बहुत मुखालफत होती रहती है। बहरहाल, उन्होंने न किसी को जवाब दिया, न झगड़ा किया और न ही किसी को भावनात्मक तकलीफ पहुँचाई।

दूसरों की तकलीफ उनसे बर्दाश्त नहीं होती थी। वे उनकी मदद के लिए बेचैन रहती थीं। छोटे बच्चों से बहुत प्यार करती थीं। वे बहुत खुद्दार थीं। अपनी ज़रूरत को अपने दिल में छिपाकर रखती थीं और किसी से उसका ज़िक्र नहीं करती थीं। उन्हें अल्लाह तआला पर असाधारण भरोसा था। अल्लाह तआला भी उनकी खुद्दारी का मान रखता था और ग़ैब से उनके लिए ज़रूरत का सामान उपलब्ध करवा देता था।

उनकी बहन उम्मतुर-रऊफ़ साहिबा, जो मरहूम डॉक्टर तासीर मुज्तबा की पत्नी हैं, कहती हैं कि हमारी बहन बहुत शांत स्वभाव, किसी को नुकसान न पहुँचाने वाली, सब्र करने वाली और बेहद खुद्दार थीं। वे गरीबों का ध्यान रखती थीं और बहुत अधिक सदका तथा खैरात करती थीं। खिलाफत का असाधारण सम्मान करती थीं। यदि कोई कोई बात कह देता, तो वे तुरंत मान लेती थीं।

जब वे बीमार हुईं, तो उन्हें अंदाज़ा था कि उनकी बीमारी ऐसी है कि अब बचना मुश्किल है और अस्पताल जाने का कोई फायदा नहीं होगा। लेकिन मैंने उनसे कहा कि आप अस्पताल जाएँ और इलाज करवाएँ। पहले उन्होंने इनकार किया, फिर मान गईं और अस्पताल जाकर इलाज भी करवाया।

उनके बेटे महमूद इफ़्तिखार बताते हैं कि उनकी माँ उन्हें नसीहत करती थीं कि तुम्हारा संबंध हज़रत मसीह मौऊद के परिवार से है, इसलिए तुम्हारा दोगुना फर्ज़ है कि जमाअत की सेवा करो।

वे कहते हैं कि खिलाफत-ए-ख़ामिसा के शुरुआती दौर में, जब हम छोटे बच्चे थे, उन्होंने हम दोनों से तुरंत पत्र लिखवाया कि ख़लीफ़ा-ए-वक्त को पत्र लिखो। फिर हमें नसीहत करती थीं कि नियमित रूप से पत्र लिखा करो। वे हमेशा नमाज़ पढ़ने और ख़ुत्बा सुनने की ताकीद करती थीं। उन्हें जमाअत के निज़ाम के बारे में बहुत गैरत थी और वे यह बर्दाश्त नहीं करती थीं कि निज़ाम के खिलाफ कोई बात हो या आलोचना की जाए।

उनके बेटे कहते हैं कि उनके माता-पिता की औलाद में से जो भी वक्फ करता, उन्हें बहुत खुशी होती थी। वे कहती थीं कि जिन्होंने वक्फ किया है, उन्हें कभी आर्थिक तंगी नहीं होती। उनकी इच्छा थी कि उनके दोनों बेटे वक्फ करें। एक बेटे ने वक्फ कर दिया है।

वे कहते हैं कि जब मैंने वक्फ किया, तो उन्होंने मुझे नसीहत की कि अब तुमने वक्फ तो कर दिया है, लेकिन इसे अच्छी तरह निभाना है। जब मुझे तरक्की मिली और नायब नाज़िर बनाया गया, तो उन्होंने कहा कि अब इस बात पर गर्व नहीं करना, बल्कि विनम्रता से काम लेना है।

दफ्तर के कामों के संबंध में वे कहते हैं कि उनकी माँ उनके लिए बहुत दुआ करती थीं। वे जमाअत के हालात के बारे में पूछती रहती थीं। शुक्रवार को उनकी खैरियत पूछती थीं। यदि कोई काम होता, तो पूछती थीं कि क्या कर रहे हो? यदि मैं बताता कि इस समय जमाअत का काम कर रहा हूँ, तो कहती थीं कि ठीक है, पहले अपना जमाअती काम खत्म करो, फिर मेरा काम कर देना।

उन्हें अपनी अपेक्षा दूसरों की अधिक चिंता रहती थी और वे उनकी ज़रूरतों का ध्यान रखती थीं। उनका बेटा लिखता है कि यदि कोई मदद माँगता, तो अम्मी ज़रूर मदद करती थीं। उनमें सहनशक्ति और धैर्य बहुत था। वे अपनी तकलीफ सह लेती थीं, लेकिन किसी दूसरे की तकलीफ उनसे बर्दाश्त नहीं होती थी। वे चाहती थीं कि किसी दूसरे को तकलीफ न हो और उसकी तकलीफ दूर करने की कोशिश करती थीं।

वे अपने सभी भाई-बहनों, उनके बच्चों और मेरे पिता की पहली पत्नी के बच्चों से बहुत प्यार करती थीं और हमेशा उनका ध्यान रखती थीं। वे हम भाइयों से भी कहती थीं कि तुमने हमेशा मिल-जुलकर रहना है। दोनों माँओं के बच्चे आपस में मिलकर रहो और एक जान होकर रहो। बिल्कुल लड़ाई नहीं करनी।

उन्होंने कभी ऐसी कोई बात नहीं की जिससे मेरे पिता की पहली पत्नी के बच्चों और हमारे बीच कोई अंतर पैदा होता। बल्कि वे हमेशा प्यार और मोहब्बत से रहने की नसीहत करती थीं।

मैंने भी देखा है कि उन्होंने अपने पति की पहली पत्नी के बच्चों का बहुत ध्यान रखा। उनकी पहली पत्नी छोटे बच्चों को छोड़कर दुनिया से चली गई थीं। अज़ीज़ा ने उन बच्चों का बिल्कुल अपने बच्चों की तरह ध्यान रखा। जितने अवसर और जैसे हालात थे, उनके अनुसार जो कुछ कर सकती थीं, उन्होंने उनके लिए किया।

उनका बेटा लिखता है कि हमारे बचपन में उन्हें हमारी सबसे अधिक चिंता इस बात की रहती थी कि हम पवित्र क़ुरआन पूरा पढ़ें और सीखें। इसके लिए वे हमें नियमित रूप से क़ुरआन पढ़ाने वाले के पास ले जाती थीं, वहाँ छोड़कर आती थीं और फिर वापस लेने भी जाती थीं। वे समय पर नमाज़ अदा करने की ओर ध्यान दिलाती थीं।

जब अपने माता-पिता का ज़िक्र करतीं, तो उनकी सेवाओं का बहुत उल्लेख करती थीं। वे कहती थीं कि काश! वे ज़िंदा होते और देखते कि उन्होंने तो मुश्किल हालात में ज़िंदगी गुज़ारी, लेकिन आज हमारे हालात बहुत बेहतर हैं और पहले के मुकाबले हमारे पास अधिक सुविधाएँ हैं।

वे अपने माता-पिता की सेवा करने वालों की भी बहुत सेवा करती थीं और उनका आभार व्यक्त करती थीं। उनका बेटा कहता है कि वे हमें जो नसीहत करती थीं, खुद भी उस पर अमल करती थीं और बुज़ुर्गों के नसीहत भरे वाक़िए सुनाया करती थीं।

जब उन्होंने पढ़ना सीखा, तो बचपन में सबसे पहली किताब जो हमें पढ़ने के लिए दी, वह सय्यदना बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु और शहज़ादा अब्दुल लतीफ़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में थी।

इसी तरह उन्हें चंदों की बहुत चिंता रहती थी कि वे शुरू में ही अदा हो जाएँ और कोई चंदा देर से न दिया जाए। वे कहती थीं कि एक बार मैंने चंदे का वादा लिखवाया था, लेकिन मेरे पास रकम नहीं थी। मुझे बहुत चिंता हुई, तो मैंने अल्लाह तआला से दुआ की। अल्लाह तआला ने जल्द ही इंतज़ाम कर दिया।

वे हमें भी नसीहत करती थीं कि नियमित रूप से चंदा दिया करो। उन्हें सच्चे सपने आते थे। वे दूसरों के राज़ हमेशा राज़ रखती थीं। उनके स्वभाव में दूसरों की कमियाँ छिपाने का गुण बहुत अधिक था।

इसी तरह उनका बेटा कहता है कि सच्चे सपनों में एक सपना यह भी था कि उन्होंने सपने में मेरा नाम महमूद इफ़्तिखार देखा था। हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह राबे रहमतुल्लाह अलैहि ने सपने में उन्हें यह नाम बताया था। इसके बाद मेरा नाम यही रखा गया।

वे लिखते हैं कि उन्होंने अपनी ज़िंदगी में बहुत-सी मुश्किलें देखीं, लेकिन कभी किसी तकलीफ का ज़िक्र नहीं किया और हमेशा अल्लाह का शुक्र अदा करती थीं।

आखिरी बीमारी में भी वे हमारा ध्यान रखती थीं। यदि मैं अस्पताल या घर में उनके लिए जाग रहा होता, तो वे कहतीं कि सो जाओ। जब मैं सोया होता, तो वे मुझे खुद नहीं जगाती थीं, बल्कि इंतज़ार करती थीं कि जब मैं जागूँ, तब मुझे कोई काम बताएँ।

उनका बेटा आगे लिखता है कि उन्होंने अपनी खुशियाँ कुर्बान करके दूसरों की खुशियों को अहमियत दी और वक्फ-ए-ज़िंदगी करने वालों का बहुत सम्मान करती थीं।

इसी तरह उनका दूसरा छोटा बेटा हाशिर भी उन्हीं बातों को दोहरा रहा है जो बड़े बेटे ने लिखी हैं। वह कहता है कि वे अपनी नानी की तरह खुले दिल वाली थीं और गरीबों पर पैसा खर्च करने में कभी कमी नहीं करती थीं। वे मुझसे भी कहती थीं कि भले ही तुमने नियमित रूप से वक्फ न किया हो, लेकिन धर्म की सेवा करो। जब मैंने बताया कि मैं जर्मनी में सेवा कर रहा हूँ, तो उन्हें बहुत खुशी हुई।

अल्लाह तआला अज़ीज़ा के साथ मग़फिरत और रहम का व्यवहार फ़रमाए और उनके दर्जे बुलंद करे।

तीसरे जनाज़े का ज़िक्र आदरणीय रशीद अहमद अयाज़ साहब का है। वे सदर अंजुमन अहमदिया के पेंशनर थे।

पिछले दिनों 86 वर्ष की उम्र में उनका निधन हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। अल्लाह तआला के फज़ल से वे मूसी थे। उनके पीछे उनकी पत्नी, दो बेटियाँ और चार बेटे हैं।

उनके एक बेटे ताहिर अहमद ज़फर साहब मुर्बी सिलसिला हैं और जामिया अल-मुबश्शिरीन घाना के वाइस प्रिंसिपल हैं। अपनी जिम्मेदारियों और मैदान-ए-अमल में होने के कारण वे अपने पिता के जनाज़े में शामिल नहीं हो सके थे। अल्लाह तआला उन्हें भी सब्र और हिम्मत प्रदान करे।

यही मुर्बी साहब लिखते हैं कि हमारे परिवार में अहमदियत का प्रवेश हमारे परदादा मरहूम आदरणीय मियाँ अल्लाह दत्ता साहब अबसार चूर के माध्यम से हुआ था। फिर उनके परिवार में अहमदियत फैली।

रशीद अयाज़ साहब सदर अंजुमन अहमदिया के विभिन्न विभागों में सेवाएँ देते रहे। सेवानिवृत्ति के बाद भी उन्होंने दूसरे काम किए। वे नियमित रूप से नफ़्ल नमाज़ पढ़ते थे और नमाज़ों की पाबंदी करते थे। बहुत अधिक ज़िक्र करते थे और बहुत दुआएँ माँगते थे। वे खिलाफत से गहरी श्रद्धा रखने वाले इंसान थे। नियमित रूप से पवित्र क़ुरआन की तिलावत करते थे।

वे चंदों में बहुत नियमित थे और उनका पूरा रिकॉर्ड रखते थे। वे मूसी थे और अपनी जायदाद का हिस्सा भी अपनी ज़िंदगी में अदा कर चुके थे।

अल्लाह तआला उनके साथ मग़फिरत और रहम का व्यवहार फ़रमाए।

★ ★ ★

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद[रज़ि.] जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

ख़न्दक के युद्ध के समय इस्लामी सेना की वास्तविक संख्या?

यहां सेना की संख्या के बारे में इतिहासकारों में अत्यधिक मतभेद हैं। कुछ लोगों ने इस सेना की संख्या तीन हज़ार लिखी है, कुछ ने बारह-तेरह सौ और कुछ ने सात-सौ। यह इतना बड़ा मतभेद है कि जिसकी व्याख्या प्रायः कठिन मालूम होती है तथा इतिहासकार इसे हल नहीं कर सके परन्तु मैंने इस की वास्तविकता को पा लिया है और वह यह कि तीनों प्रकार की रिवायतें सही हैं। यह बताया जा चुका है कि उहद के युद्ध में मुनाफ़िक लोगों के वापस आ जाने के पश्चात् मुसलमानों की सेना केवल सात सौ सदस्यों पर आधारित थी। अहज़ाब का युद्ध इसके दो वर्ष पश्चात् हुआ है तथा इस अवधि में कोई बड़ा क़बीला इस्लाम को स्वीकार करके मदीने में आकर आबाद नहीं हुआ। अतः सात सौ लोगों का सहसा तीन हज़ार हो जाना अनुमान के विपरीत है। दूसरी ओर यह बात भी युक्ति संगत नहीं कि उहद के दो वर्ष पश्चात् तक इस्लाम की उन्नति के बावजूद युद्ध करने के योग्य मुसलमान इतने ही रहे जितने उहद युद्ध के समय थे। अतः इन दोनों समीक्षाओं के बाद वह रिवायत ही उचित मालूम होती है कि लड़ने के योग्य मुसलमान अहज़ाब युद्ध के समय बारह सौ थे। अब रहा यह प्रश्न कि फिर किसी ने तीन हज़ार और किसी ने सात सौ क्यों लिखा है, तो इसका उत्तर यह है कि ये दो रिवायतें (वर्णन) पृथक-पृथक परिस्थितियों और दृष्टिकोणों के अन्तरगत वर्णन की गई हैं। अहज़ाब युद्ध के तीन भाग थे। एक भाग वह था जब अभी शत्रु मदीने के सामने नहीं आया था और खाई (ख़न्दक़) खोदी जा रही थी। इस कार्य में मिट्टी ढोने का कार्य कम से कम बच्चे भी कर सकते थे और कुछ स्त्रियाँ भी इस कार्य में सहयोग दे सकती थीं। अतः जब तक खाई खोदने का कार्य जारी रहा, मुसलमान सेना की संख्या तीन हज़ार थी, परन्तु इस में बच्चे भी सम्मिलित थे तथा सहाबी स्त्रियों की तेजस्वी भावना देख कर हम कह सकते हैं कि इस संख्या में कुछ स्त्रियाँ भी सम्मिलित रही होंगी जो खाई खोदने का कार्य तो नहीं करती होंगी, परन्तु अतिरिक्त कार्यों में भाग लेती होंगी। यह मेरा विचार ही नहीं, इतिहास से भी इस विचार की पुष्टि होती है। अतः लिखा है कि जब खाई खोदने का समय आया सब लड़के एकत्र कर लिए गए तथा सभी पुरुष चाहे वे बड़े थे या बच्चे; खाई खोदने अथवा उसमें सहायता देने का कार्य करते थे। फिर जब शत्रु आ गया और युद्ध आरम्भ हुआ तो रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने उन समस्त लड़कों को जो पन्द्रह वर्ष के थे उन्हें अनुमति दी कि चाहे ठहरें चाहे चले जाएँ।[1]

इस रिवायत से विदित होता है कि खाई खोदते समय मुसलमानों की संख्या अधिक थी तथा युद्ध के समय कम हो गई क्योंकि अवयस्कों को वापस चले जाने का आदेश दे दिया गया था। अतः जिन रिवायतों में तीन हज़ार की चर्चा है वह खाई खोदने के समय की संख्या बताती हैं जिसमें छोटे बच्चे भी सम्मिलित थे तथा जैसा कि मैंने अन्य युद्धों को देखते हुए अनुमान द्वारा जो परिणाम निकाला है कुछ स्त्रियाँ भी थीं परन्तु बारह सौ की संख्या उस समय की है जब युद्ध प्रारम्भ हो गया और केवल वयस्क पुरुष रह गए। अब रहा यह प्रश्न कि तीसरी रिवायत जो सात सौ सिपाही बताती है क्या वह भी उचित है?

इस का उत्तर यह है कि यह रिवायत इतिहासकार इब्ने इस्हाक़ ने लिखी है जो विश्वसनीय इतिहासकार है तथा इब्ने हज़्म जैसे प्रकाण्ड विद्वान ने उस की भरपूर पुष्टि की है। अतः इसके संबंध में भी सन्देह नहीं किया जा सकता तथा उसकी पुष्टि इस प्रकार भी होती है कि इतिहास की गहरी छान-बीन से विदित होता है कि जब युद्ध के समय बनू क़ुरैज़ा काफ़िरों की सेना में जा मिले तथा उन्होंने यह इरादा किया कि मदीना पर अचानक आक्रमण कर दे परन्तु उनकी दूषित भावनाओं का रहस्य प्रकट हो गया तो मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने मदीना की उस ओर की सुरक्षा आवश्यक समझी जिस ओर बनू क़ुरैज़ा थे तथा जिस ओर इस विचार के अनुसार सुरक्षा की उपेक्षा की गई थी कि बनू क़रैज़ा हमारे साथी हैं। ये लोग शत्रु को उस ओर से न आने देंगे। अतः इतिहास द्वारा ज्ञात होता है कि जब बनू क़ुरैज़ा के द्रोह का पता लगा, तो चूंकि बनू क़ुरैज़ा के विश्वास पर स्त्रियाँ उस क्षेत्र में रखी गई थीं। जिस ओर बनू क़रैज़ा के क़िले थे और असुरक्षित थीं; रसूले करीम (स.अ.व.) ने अब उनकी सुरक्षा आवश्यक समझी तथा मुसलमानों के दो सैन्य दल तैयार करके स्त्रियों के ठहरने के दोनों भागों पर नियुक्त कर दिए। मुस्लिमा बिन असलम[रज़ि.] को दो सौ सहाबा देकर एक स्थान पर नियुक्त किया और ज़ैद बिन हारिस[रज़ि.] को तीन सौ सहाबा देकर दूसरे स्थान पर नियुक्त किया तथा आदेश दिया कि थोड़े-थोड़े समय पर उच्च स्वर में अल्लाहो अकबर का उदघोष करते रहें ताकि ज्ञात होता रहे कि स्त्रियाँ सुरक्षित हैं। इस रिवायत से हमारी यह कठिनाई कि इब्ने इस्हाक़ ने सात सौ सैनिक ख़न्दक़ युद्ध में क्यों बताए हैं हल हो जाती है क्योंकि बारह सौ सैनिकों में से जब पाँच सौ सिपाही स्त्रियों की सुरक्षा के लिए भेज दिए गए तो बारह सौ की सेना मात्र सात सौ रह गई तथा इस प्रकार ख़न्दक़ युद्ध के सैनिकों की संख्या के बारे में इतिहासों में बहुत मतभेद पाया जाता है उसका निवारण हो गया।

सारांश यह कि इस महान संकट के समय ख़न्दक़ की सुरक्षा के लिए रसूले करीम (स.अ.व.) के पास केवल सात सौ लोग थे। इस में कोई सन्देह नहीं कि आप सने ख़न्दक खोदी थी परन्तु फिर भी इतनी बड़ी सेना के ख़न्दक़ के पार से रोकना भी इतने कम लोगों के लिए असंभव था परन्तु ख़ुदा तआला की अलौकिक सहायता के सहारे यह मुट्ठी भर सेना ईमान और विश्वास के साथ ख़न्दक़ के पीछे शत्रु की विशाल सेना की प्रतीक्षा करने लगी और स्त्रियाँ तथा बच्चे दो अलग-अलग स्थानों पर एकत्र कर दिए गए। शत्रु जब ख़न्दक़ तक पहुँचा तो चूंकि यह अरबों के लिए बिल्कुल नई बात थी और वे इस प्रकार के युद्ध के लिए तैयार न थे। उन्होंने ख़न्दक़ के सामने अपने शिविर लगा दिए और मदीने में प्रवेश करने के लिए उपाय सोचने लगे।

बनू क़ुरैज़ा का विश्वासघात

चूंकि मदीना का एक ओर का पर्याप्त भाग ख़न्दक़ से सुरक्षित था और दूसरी ओर कुछ पर्वतीय टीले, पक्के मकान तथा कुछ बाग़ आदि थे, इसलिए सेना तुरन्त आक्रमण नहीं कर सकती थी। अतः उन्होंने परामर्श करके यह उपाय किया कि किसी प्रकार यहूद का तीसरा क़बीला जो अभी मदीना में शेष था, जिसका नाम बनू क़ुरैज़ा था अपने साथ मिला लिया जाए और इस के द्वारा मदीना तक पहुँचने का मार्ग खुल जाए। अतः परामर्श के पश्चात् हुय्यि इब्ने अख़तब को जो बनू नज़ीर का सरदार था जिसको देश से निकाला जा चुका था और जिसके उपद्रव और उत्पात के कारण सम्पूर्ण अरब एकत्र होकर मदीना पर आक्रमणकारी हुआ था, काफ़िरों की सेना के सेनापति अबू सुफ़यान ने इसे इस बात पर नियुक्त किया कि जैसे भी हो बनू क़ुरैज़ा को अपने साथ मिला लो। अतः हुय्यिइब्ने अख़तब यहूदियों के क़िलों की ओर गया। उसने बनू क़रैज़ा के सरदारों से मिलना चाहा। पहले तो उन्होंने मिलने से इन्कार कर दिया परन्तु जब उसने उन्हें समझाया कि इस समय सारा अरब मुसलमानों का विनाश करने के लिए आया है तथा यह बस्ती समस्त अरब का मुकाबला किसी भी प्रकार नहीं कर सकती। इस समय जो सेना मुसलमानों के मुकाबले पर खड़ी है उसे सेना नहीं कहना चाहिए अपितु ठाठे मारने वाला समुद्र कहना चाहिए। इस प्रकार अन्ततः उस ने बनू क़ुरैज़ा को ग़द्दारी और संधि भंग करने पर तैयार कर दिया तथा यह निर्णय हुआ कि काफ़िरों की सेना सामने की ओर से ख़न्दक़ पार करने का प्रयास करे और जब वह ख़न्दक पार करने में सफल हो जाएगी तो बनू क़ुरैज़ा की दूसरी ओर से मदीने के उस भाग पर आक्रमण कर देंगे जहाँ स्त्रियाँ और बच्चे हैं जो बनू क़ुरैज़ा पर विश्वास करके असुरक्षित छोड़ दिए गए थे। इस प्रकार मुसलमानों का मुकाबला करने की शक्ति पूर्णतया कुचली जाएगी तथा एक ही बार में मुसलमान पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे सब मार दिए जाएँगे। यह निश्चित बात है कि यदि इस योजना में काफ़िरों को कुछ सफलता भी मिल जाती तो मुसलमानों के लिए सुरक्षा का कोई स्थान शेष नहीं रहता था। बनू क़रैज़ा मुसलमानों के समझौते के अनुसार मित्र थे और यदि वे इस खुले युद्ध में सम्मिलित न भी होते तब भी मुसलमान यह आशा करते थे कि उनकी ओर से होकर मदीने पर कोई आक्रमण नहीं कर सकेगा। यही कारण था कि उनकी ओर का भाग बिल्कुल असुरक्षित छोड़ दिया गया था। बनू क़ुरैज़ा और काफ़िरों ने इस परिस्थिति के उपलक्ष्य यह निर्णय कर दिया था कि जब बनू क़ुरैज़ा काफ़िरों के साथ मिल गए तो वे प्रत्यक्ष रूप से काफ़िरों की सहायता न करें, ताकि ऐसा ने हो कि मुसलमान मदीने के इस भाग की सुरक्षा की भी कोई व्यवस्था कर लें जो बनू क़ुरैज़ा के क्षेत्र के साथ लगता था। यह योजना अत्यन्त भयानक थी। मुसलमानों को असावधान रखते हुए बनू क़ुरैज़ा का ऐसी आपात स्थिति में शत्रु के साथ जा मिलना, जबकि शत्रु की सेना का इस्लामी सेना पर

भयानक आक्रमण हो रहा हो मदीने की उस ओर की सुरक्षा को जिस ओर बनू क़ुरैज़ा के क़िले थे बिल्कुल असंभव बना दिया था। मुसलमानों पर दोनों ओर से आक्रमण की संभावना के पश्चात् मक्का की सेना ने ख़न्दक़ पर आक्रमण प्रारम्भ किया। पहले कुछ दिन तो उनकी समझ में न आया कि वे ख़न्दक़ को किस प्रकार पार करें परन्तु दो चार दिन के पश्चात् उन्होंने यह उपाय निकाला कि धनुषधारी ऊँचे स्थानों पर खड़े होकर उन मुसलमान दलों पर वाण बरसाना आरम्भ कर देते थे जो ख़न्दक़ की सुरक्षा के लिए ख़न्दक़ के साथ-साथ थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बैठाए गए थे। जब तीरों की बौछार के कारण मुसलमान पीछे हटने पर विवश हो जाते तो उच्च कोटि के घुड़सवार ख़न्दक फांदने का प्रयास करते। विचार किया गया कि इस प्रकार के निरन्तर आक्रमणों के परिणामस्वरूप कोई न कोई ऐसा स्थान निकल आएगा जहाँ से पैदल सेना अधिक संख्या में ख़न्दक़ पार कर सकेगी। ये आक्रमण निरन्तर इतनी अधिकता के साथ किए जाते थे कि कई बार मुसलमानों को सांस लेने का भी अवसर नहीं मिलता था। अतः एक दिन आक्रमण इतना भीषण हो गया कि मुसलमानों की कुछ नमाज़ें समय पर अदा न हो सकीं, जिसका रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को इतना आघात पहुँचा कि आप ने फ़रमाया ख़ुदा काफ़िरों को दण्ड दे, उन्होंने हमारी नमाज़ें नष्ट कीं[1]। यद्यपि मैंने यह वृत्तान्त शत्रुओं के आक्रमणों की भयंकरता प्रकट करने के लिए वर्णन किया है परन्तु इस से मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के चरित्र पर अत्यधिक प्रकाश पड़ता है और ज्ञात होता है कि आप के लिए संसार में सर्वप्रिय वस्तु ख़ुदा तआला की उपासना थी। जब कि शत्रु मदीना को चारों ओर से घेरे हुआ था, जब कि मदीना के पुरुष तो पृथक रहे स्त्रियों और बच्चों के प्राण भी ख़तरे में थे। जब हर समय मदीने के लोगों का हृदय धड़क रहा था कि शत्रु किसी ओर से मदीने के अन्दर प्रेवश न कर जाए, उस समय भी मुहम्मद रसूलुल्लाह की इच्छा यही थी कि ख़ुदा तआला की इबादत यथा समय उचित प्रकार से अदा हो जाए। मुसलमानों की उपासना यहूदियों, ईसाइयों और हिन्दुओं की भांति सप्ताह में किसी एक दिन नहीं हुआ करती अपितु मुसलमानों की इबादत (उपासना) एक दिन में पाँच बार होती है। ऐसी ख़तरनाक अवस्था में तो दिन में एक बार भी नमाज़ अदा करना मनुष्य के लिए कठिन है कहाँ, पाँच समय और वह भी यथाविधि नियमपूर्वक बाजमाअत (सामूहिक तौर पर) नमाज़ अदा की जाए, परन्तु इन विकट परिस्थितियों में भी मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ये पाँचों नमाज़ें निर्धारित समय पर अदा करते थे और यदि एक दिन शत्रु के भीषण आक्रमण के कारण आपस. अपने रब्ब का नाम सन्तोष और शान्ति से यथा समय ने ले सके तो आपको अत्यधिक मानसिक कष्ट पहुँचा। उस समय सामने से शत्रु आक्रमण कर रहा था तथा पीछे से बनू क़ुरैज़ा इस घात में थे कि कोई अवसर मिल जाए तो मुसलमानों में सन्देह पैदा किए बिना वे मदीने के अन्दर घुस कर स्त्रियों और बच्चों का वध कर दें। अतः एक दिन बनू क़ुरैज़ा ने एक जासूस भेजा ताकि वह मालूम करे कि स्त्रियां और बच्चे अकेले ही हैं अथवा पर्याप्त सिपाही सुरक्षा पर नियुक्त हैं। जिस विशेष घेरे में वे विशेष-विशेष ख़ानदान जिन्हें शत्रु से बहुत ख़तरा था एकत्र कर दिए गए थे उसके निकट एक जासूस ने आकर घूमना और चारों ओर से निरीक्षण करना प्रारम्भ किया कि मुसलमान सैनिक कहीं आस-पास छुपे हुए तो नहीं। वह अभी इसी टोह में लगा था कि रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की फूफी हज़रत सफ़ियारज़ि. ने उस देख लिया। संयोग से उस समय वहाँ एक ही मुसलमान मौजूद था और वह भी बीमार था। हज़रत सफ़ियारज़ि. ने उस से कहा कि यह व्यक्ति काफी समय से स्त्रियों के क्षेत्र में मंडला रहा है और जाने का नाम नहीं लेता तथा चारों ओर देखता फिरता है। यह निश्चत ही जासूस है; तुम इसका मुकाबला करो, ऐसा न हो कि शत्रु परिस्थितियों पर पूर्णरूप से अवगत हो कर इधर आक्रमण कर दे। इस रोगग्रस्त सहाबी ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया, तब हज़रत सफ़ियारज़ि. ने स्वयं एक बड़ा बांस लेकर उस व्यक्ति का मुकाबला किया तथा अन्य स्त्रियों की सहायता से उसे मारने में सफल हो गईं। छान-बीन करने पर ज्ञात हुआ कि वह यहूदी बनू क़ुरैज़ा का जासूस था। अतः मुसलमान और अधिक घबराए तथा समझे कि अब मदीने का यह भाग भी सुरक्षित नहीं है परन्तु सामने की ओर से शत्रु का इतना दबाव था कि वे इस ओर की सुरक्षा की कोई व्यवस्था भी नहीं कर सकते थे। इसके बावजूद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने स्त्रियों की सुरक्षा को प्राथमिकता दी और जैसा कि वर्णन किया जा चुका है बारह सौ सैनिकों में से पाँच सौ को स्त्रियों की सुरक्षा के लिए शहर में नियुक्त कर दिया तथा ख़न्दक़ की सुरक्षा तथा अठारह-बीस हज़ार सेना के मुकाबले के लिए केवल सात सौ सैनिक रह गए। इस परिस्थिति में कुछ मुसलमान घबरा कर रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पास आए और कहा हे अल्लाह के रसूल ! परिस्थितियां नितान्त भयानक रूप धारण कर चुकी हैं अब प्रकट रूप से मदीने के बचने की कोई आशा दिखाई नहीं देती; आपस. ख़ुदा तआला से विशेष तौर पर दुआ करें और हमें भी कोई दुआ सिखाएँ, जिसके पढ़ने से हम पर ख़ुदा तआला की कृपा हो। आपस. ने फ़रमाया तुम लोग घबराओ नहीं, तुम ख़ुदा तआला से यह दुआ किया करो कि तुम्हारे दोषों पर पर्दा डाले, तुम्हारे हृदयों को दृढ़ता प्रदान करे तथा घबराहट को दूर करे। फिर आपस. ने स्वयं भी इस प्रकार दुआ की

اَللّٰهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتٰبِ سَرِيْعَ الْحِسَابِ اهْزِمِ الْاَحْزَابَ اَللّٰهُمَّ اهْزِمْهُمْ وَانْصُرْنَا عَلَيْهِمْ وَزَلْزِلْهُمْ[1]

और इसी प्रकार यह दुआ की

يَاصَرِيْخَ الْمَكْرُوْبِيْنَ يَامُجِيْبَ الْمُضْطَرِّيْنَ اكْشِفْ هَمِّيْ وَغَمِّيْ وَكَرْبِيْ فَاِنَّكَ تَرٰى مَانزل بى وَ بِاَصْحَابِيْ[2]

हे अल्लाह ! जिसने मुझ पर क़ुर्आन करीम उतारा है, जो अपने बन्दों से अति शीघ्र हिसाब ले सकता है यह गिरोह जो संगठित होकर आए हैं उन्हें पराजित कर दे। अल्लाह! मैं पुनः प्रार्थना करता हूँ कि तू उन्हें पराजित कर तथा हमें विजय प्रदान कर तथा उन के इरादों को छिन्न-भिन्न कर दे, हे विवश लोगों की पुकार सुनने वाले, हे व्याकुल लोगों की गुहार सुनने वाले! मेरी व्याकुलता और चिन्ता का निवारण कर, क्योंकि तू उन संकटों को जानता है जिनसे मैं और मेरे साथियों का सामना है।

मुनाफिकों तथा मोमनों का स्वरूप

इस अवसर पर पाखंडी (मुनाफ़िक़) तो इतने घबरा गए कि जातिगत स्वाभिमान, अपने नगर, अपनी स्त्रियों और बच्चों की सुरक्षा का विचार तक उनके हृदयों से निकल गया परन्तु वे अपनी जाति के सामने अपमानित भी नहीं होना चाहते थे, इसलिए उन्होंने बहाने बना कर सेना से पलायन का उपाय सोचा। क़ुर्आन करीम में आता है وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۛ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۛ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا

अर्थात् उनमें से एक गिरोह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और आप से आज्ञा मांगी कि उन्हें रणभूमि से वापस जाने की आज्ञा प्रदान की जाए; क्योंकि उन्होंने कहा (अब यहूदी भी विरोधी हो गए हैं और उस ओर से सुरक्षा का कोई साधन भी नहीं) हमारे घर उस क्षेत्र की ओर से असुरक्षित हैं (अतः हमें आज्ञा दीजिए कि हम जा कर अपने घरों की सुरक्षा करें) परन्तु उन का यह कहना कि उनके घर असुरक्षित हैं बिल्कुल ग़लत है, वे घर असुरक्षित नहीं हैं (क्योंकि ख़ुदा तआला मदीने की सुरक्षा के लिए ख़ड़ा है) वे तो केवल युद्ध से भयभीत होकर युद्ध भूमि से भागना चाहते हैं। उस समय मुसलमानों की जो दशा थी उस का चित्र क़ुर्आन करीम ने यों खींचा है।

اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ○ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ○ وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اِلَّا غُرُوْرًا ○ وَاِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰٓاَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ

अर्थात् याद तो करो! जब तुम पर सेना चढ़ कर आ गई तुम्हारी ऊपरी ओर से भी और नीचे की ओर से भी अर्थात् नीचे की ओर से काफ़िर और ऊपर की ओर से यहूद, जब कि आँखें टेढ़ी होने लगीं और हृदय उछल-उछल कर कंठ तक आने लगे और तुम से कई लोगों के हृदयों में ख़ुदा के सम्बन्ध में अशुभ धारणाएं उत्पन्न होने लग गईं। उस समय मोमिनों के ईमान की परीक्षा ली गई तथा मोमिनों को पूर्णतया झंझोड़ कर रख दिया तथा स्मरण करो ! जबकि पाखण्डी (मुनाफ़िक़) और वे लोग जो मानसिक रोगी थे उन्होंने यह कहना आरम्भ किया अल्लाह और उसके रसूल ने हम से झूठे वादे किए थे और स्मरण करो ! जब उनमें से एक गिरोह इस सीमा तक पहुँच गया कि उन्होंने मोमिनों के पास भी जा-जा कर कहना आरम्भ कर दिया कि तुम्हें अब कोई सुरक्षा की चौकी या क़िला बचा नहीं सकता। अतः यहां से भाग जाओ। मोमिनों के बारे में फ़रमाता है

शेष ..

★ ★ ★

Editor: Shaikh Mujahid Ahmad
Dy. Editor: Syed Mohiuddin Farid
Editor : +91-9915379255
akhbaarbadarhindiqdn@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 22-29 October 2026 Issue No. 43-44

Act. Manager
Athar Ahmad Shamim
Mobile : +91-9815639670
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 600/- (Per Issue : Rs. 12/-) (WEIGHT: 20-50 gms/issue)

सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

117 बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम।

मियाँ अब्दुल्लाह साहिब सुनौरी ने मुझसे बयान किया कि यह शुरुआती ज़माने की बात है। एक बार रमज़ान के महीने में एक मेहमान हज़रत साहिब के पास आया। उस समय उसका रोज़ा था और दिन का ज़्यादातर हिस्सा गुज़र चुका था, बल्कि शायद अस्र के बाद का समय था। हज़रत साहिब ने उससे फ़रमाया कि आप रोज़ा खोल दें। उसने अर्ज़ किया कि अब थोड़ा-सा दिन बाकी रह गया है, अब रोज़ा क्यों खोलूँ? हुज़ूर ने फ़रमाया, "आप ज़बरदस्ती करके ख़ुदा तआला को राज़ी करना चाहते हैं। ख़ुदा तआला ज़बरदस्ती से नहीं, बल्कि फ़रमाँबरदारी से राज़ी होता है। जब उसने फ़रमा दिया है कि मुसाफ़िर रोज़ा न रखे, तो रोज़ा नहीं रखना चाहिए।" इस पर उसने रोज़ा खोल दिया।

ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि मौलवी शेर अली साहिब बयान करते थे कि एक बार हज़रत साहिब के ज़माने में हकीम फ़ज़लुद्दीन साहिब भीरवी एतिकाफ़ में बैठे, लेकिन एतिकाफ़ के दिनों में ही उन्हें एक मुक़दमे में पेश होने के लिए बाहर जाना पड़ा। चुनाँचे वे एतिकाफ़ तोड़कर अस्र के क़रीब यहाँ से जाने लगे, तो हज़रत साहिब ने मुस्कराते हुए फ़रमाया, "अगर आपको मुक़दमे में जाना था, तो एतिकाफ़ में बैठने की क्या ज़रूरत थी?"

118 बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम।

हमारी ताई साहिबा ने बयान किया कि मेरे ताया (यानी ख़ाकसार के दादा साहिब) कभी-कभी मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद यानी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को 'मिसीती' या 'मिसीतड़' कहा करते थे। ताई साहिबा ने कहा कि मेरे ताया को क्या मालूम था कि किसी दिन उनकी ख़ुशक़िस्मती क्या-क्या फल लाएगी।

ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि पंजाबी में 'मिसीती' उसे कहते हैं जो हर समय मस्जिद में बैठा रहे। इसके अलावा ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि सुना है कि कुछ दूसरे लोग भी कभी-कभी हज़रत साहिब के बारे में यह शब्द इस्तेमाल कर लेते थे।

119 बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम।

हज़रत वालिदा साहिबा ने मुझसे बयान किया कि जब गुरदासपुर में करमदीन के साथ हज़रत साहिब का मुक़दमा चल रहा था, तो एक बार मैंने ख़्वाब देखा कि कोई कह रहा है कि हज़रत साहिब को अमृतसर में फाँसी पर लटकाया जाएगा, ताकि क़ादियान वालों के लिए आसानी हो। जब मैंने यह ख़्वाब हज़रत साहिब को सुनाया, तो वे ख़ुश हुए और फ़रमाया कि यह ख़ुशख़बरी देने वाला ख़्वाब है।

वालिदा साहिबा फ़रमाती थीं कि हज़रत साहिब फाँसी पर चढ़ने का मतलब यह बताया करते थे कि इज़्ज़त बढ़ेगी।

ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि इस मुक़दमे में फिर अपील हुई और अमृतसर में ही आपकी बरी होने का फ़ैसला हुआ।

इसके अलावा हज़रत वालिदा साहिबा ने बयान किया कि जिन दिनों यह मुक़दमा चल रहा था, एक बार हज़रत साहिब ने घर में ज़िक्र किया कि मजिस्ट्रेट की नीयत बहुत ख़राब मालूम होती है। यह भी बयान किया कि मजिस्ट्रेट की बीवी ने ख़्वाब देखा है कि अगर उसका पति कोई ग़लत काम करेगा, तो उसके घर पर मुसीबत आएगी। चुनाँचे उसने अपने पति को यह ख़्वाब सुना दिया है और कहा है कि कोई ग़लत हरकत न करे।

वालिदा साहिबा ने बयान किया कि हज़रत साहिब फ़रमाते थे कि जब मजिस्ट्रेट का एक लड़का मर गया, तो उसकी बीवी ने उससे कहा, "क्या तुम घर उजाड़कर छोड़ना चाहते हो?"

इसके अलावा वालिदा साहिबा ने बयान किया कि जिस दिन इस मुक़दमे का फ़ैसला सुनाया जाना था, उस दिन कई लोग अपनी जेबों में रुपये भरकर ले गए थे, ताकि अगर मजिस्ट्रेट जुर्माना करे, तो उसे अदा कर दें। नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब भी लाहौर से कई हज़ार रुपये साथ लाए थे।

इसके अलावा वालिदा साहिबा ने बयान किया कि हज़रत साहिब बताया करते थे कि मुक़दमे के दिनों में अदालत के बाहर पेड़ों के नीचे जहाँ हज़रत साहिब बैठा करते थे, वहाँ से हर रोज़ डिप्टी कमिश्नर गुज़रता था, क्योंकि वही उसका रास्ता था। एक बार उसने अपने अर्दली से पूछा, "क्या यह मुक़दमा अब तक चल रहा है?" उसने कहा, "हाँ।" डिप्टी कमिश्नर ने हँसकर कहा, "अगर यह मुक़दमा मेरे पास होता, तो मैं एक ही दिन में फ़ैसला कर देता।"

ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि डिप्टी कमिश्नर अंग्रेज़ था।

120 बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम।

मौलवी शेर अली साहिब ने मुझसे बयान किया कि एक बार मैं और कुछ दूसरे लोग, जिनमें शायद मौलवी मुहम्मद अली साहिब और ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब भी थे, हज़रत साहिब से मिलने के लिए उनके घर के अंदर गए। उस समय आपने हमें खाने के लिए खरबूजे दिए।

मौलवी साहिब कहते हैं कि आपने मुझे जो खरबूजा दिया, वह काफ़ी बड़ा था। चुनाँचे देते हुए आपने फ़रमाया, "इसे खाकर देखिए, कैसा है?" फिर ख़ुद ही मुस्कराकर फ़रमाया, "मोटा आदमी मुनाफ़िक़ होता है। यह फीका ही होगा।" मौलवी साहिब कहते हैं कि वह खरबूजा फीका ही निकला।

मौलवी साहिब ने यह घटना बयान करके हँसते हुए कहा कि उस समय मैं दुबला-पतला हुआ करता था।

ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि इससे यह नहीं समझना चाहिए कि हर मोटा आदमी मुनाफ़िक़ होता है, बल्कि हज़रत साहिब की मंशा यह मालूम होती है कि जो आदमी आरामतलबी के कारण मोटा हो गया हो, वह मुनाफ़िक़ होता है।

121 बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम।

चौधरी ग़ुलाम मुहम्मद साहिब बी.ए. ने मुझसे बयान किया कि जब मैं 1905 ई. में क़ादियान आया, तो हज़रत साहिब ने हरी पगड़ी बाँधी हुई थी। यह देखकर मुझे कुछ अजीब लगा कि मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को रंगीन पगड़ी से क्या काम? फिर मैंने मुक़द्दमा इब्न ख़लदून में पढ़ा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब हरे कपड़े पहने होते थे, तो आप पर ज़्यादा वह्यी नाज़िल होती थी।

122 बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम।

मास्टर मुहम्मद दीन साहिब बी.ए. ने मुझसे बयान किया कि जब हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मजलिस में बैठते थे, तो हम ख़ास तौर पर महसूस करते थे कि हमारी अंदरूनी बीमारियाँ धुल रही हैं और रूहानियत में तरक़्क़ी हो रही है, लेकिन जब हम आपसे अलग होते थे, तो फिर यह हालत नहीं रहती थी।

इसके अलावा मौलवी शेर अली साहिब ने मुझसे बयान किया कि जब हम हज़रत साहिब की मजलिस में होते थे, तो उससे पहले हमारी हालत चाहे कैसी भी रही हो, उस समय हमारा दिल बहुत ख़ुश रहता था।

शेष ..

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad